अर्ध शताधिक ग्रंथ कर्ता ,इन्दू)हिन्दू (धर्म प्रदाता,
संचलनात्मक रचयिता ,त्रैत सिद्धान्त आदि कर्ता

श्री श्री श्री आचार्य प्रबोधानन्द योगिश्वर जी

मरण का रहस्य

Translation by
K.Ramani B.Com

Published by
Indhu Gnana Vedika
(Regd.No.168/2004)

IMP Note : To know the true and complete meaning of this Grandha (book) it must be read in Telugu Language.

मरण का रहस्य

मरण अर्थात् मर जाना यह सभी को मालूम है। जन्म और मरण हर जीव के साथ होता है। जन्म से जीव का जीवन आरम्भ तथा मरण से जीवन का अंत होता है। जीवात्मा के जन्म तथा मृत्यु के मध्य काल को जीवन कहते है।एक जीवात्मा को जन्म लेने के लिए एक शरीर की आवश्यकता होती है। वैसे ही जीवात्मा के मरण के लिए भी शरीर होना अनिवार्य है। जब शिशु जन्म लेता है उसके शरीर के अन्दर जीव के प्रवेश को जन्म अर्थात् जनन कहते है।यह विषय सब लोगों की जानकारी का विषय होते हुए भी, शारीरिक परिशोंधकों के लिए यह एक अविज्ञ रहस्य है, जिसे जनन का रहस्य कहा जाता है। अविज्ञ जन्म रहस्य को सिद्धान्त रुप से ग्रंथ के रुप में बतलाया गया है।" **जनन–मरण का सिद्धान्त** " विज्ञान के क्षेत्र में एक नया मोड़ है। मनुष्य के लिए अनजान, जनन के बारें में तथा मरण के बारें में जनन-मरण के सिद्धान्त में विज्ञान रुप से विस्तृत जानकारी दी गयी है।अब मुख्य रुप से यह जानना है कि जनन तो हो चुका है, आने वाला है मरण। इस वजह से आने वाले मरण के बारें में जानना मनुष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। मरण के बारें में भी मरण के सिद्धान्त में बतलाया गया है। इसमें जन्म एक प्रकार से, तथा मरण दो प्रकार से होना, बतलाया गया। हमारा बतलाया गया समाचार शास्त्रबद्ध है, इसलिए किसी के लिए भी खंडन करने की कोई गुंजाइश नहीं है।हमने पहले भी कहा था यह भौतिकशास्त्रियों के लिए भी अविज्ञ समाचार है, हमारे लिए अविज्ञ है क्या कहकर हमारें कहें विषयों का खंडन करना भी चाहें तो, हमारा सिद्धान्त शास्त्रबद्ध है, इसे कोई भी खडंन नहीं कर सकता है।

अभी विशेष रुप से कहना यह है कि मरण, काल तथा अकाल दो प्रकार के हैं , तीसरा प्रकार का मरण भी होता है। तीसरे प्रकार का मरण वास्तव में हमारे अनुसार मरण न होने के बावजुद, दुनिया की नजरों में यह मरण ही है। इसलिए इसे भी तीसरा मरण कहना पड़ा। अब तक विज्ञान के जानकारों को **काल मरण के** बारें में ही मालूम है। दूसरे प्रकार का **अकाल मरण** के बारें में कोई भी जानकारी नहीं है। तथा

तीसरा मरण अर्थात् **तात्कालिक मरण** के बारें में भी वर्तमान काल में, सौ फीसदी लोग अनजान हैं, कह सकते हैं।वर्तमान काल में तीसरें प्रकार का तात्कालिक मरण के बारें में किसी को भी इसकी जानकारी नहीं हैं परन्तु प्राचीन काल में कुछ लोग इसकी जानकारी रखते थे, इसके कई आधार हैं। उन आधारों की चर्चा बाद में करेंगें। मरण, कर्म से सम्बन्धित होता है या कर्म से परें है? ऐसा आध्यात्मिक गुरुओं से पुछा जाय तो कर्म द्वारा मरण तथा कर्म द्वारा ही जनन होना कहते हैं। इस प्रश्न का हमारा जवाब है। मनुष्य हो, या जन्तु हो, जीव युक्त कोई भी प्राणी हो जनन तथा मरण केवल सहजसिद्ध होता है। जनन तथा मरण प्राणीयों के लिए प्रकृति सिद्ध होता है। जन्म तथा मृत्यु कर्मातीत होता है। उनके अपने कर्म के अनुसार मरने का समय, मरने का स्थल, मरण समय में जीवन की परिस्थिति, मरते समय आरोग्य तथा अनारोग्य की स्थिति , शारीरिक ताकत, तथा शरीर की आयु निर्णीत होती है। फिर भी जन्म हो या मृत्यु कर्म से असंबंध प्रकृति सिद्ध प्रक्रिया है। केवल मरण के बारें में चर्चा करें तो मरण जीव के लिए बिना किसी अनुभुति की स्थिति होती है। इसलिए जो अनुभव में न आए उसे कर्म पर थोपना नहीं चाहिए। अनुभव में आने वाला जो भी हो कर्म से संबंधित होता है। मरण में कोई अनुभव नहीं होता है। इसलिए यह कर्म से परें है। जीवात्मा जन्म लेने के पश्चात् प्रारब्ध कर्म शुरु होता है। वैसे ही जीवात्मा का प्रारब्ध कर्म समाप्त होते ही मरण होता है। इस वजह से जनन तथा मरण दोनों कर्म से परें होना कह रहें है।

*****

मरण का अर्थ क्या होता है?

एक जीवात्मा का जीवन समाप्त होने को मरना या मरण कहते हैं। इनमें से **मरना** नामक शब्द को पूर्वकाल में **शक्ति चली** गयी या **शक्ति क्षीण** हो गयी कहा जाता था। कालक्रम में अज्ञानता बढ़ने की वजह से, शक्ति शब्द का तात्पर्य न समझ से बाहर हो गया, इसलिए शक्ति चली गई के उच्चारण के बदले में, मरना उच्चरित होने लगा। शक्ति क्षीण होना को मरना कहा जाने लगा। केवल मरण नामक शब्द प्राचीन काल से लेकर आज तक बदलाव न होकर एक ही तरह से उच्चरित हो रहा है। प्रस्तुत; बदले हुए, मरना

शब्द के बारें में विवरण करेंगें। जीवित मनुष्य के अन्दर दो आत्माओं का होना सहज है। सिद्धान्त रुप से एक मनुष्य के शरीर के अन्दर ही नहीं बल्कि, प्राण युक्त हर जाति के शरीर के अन्दर दो आत्माएँ होती है। और विस्तार से कहें तो योगशास्त्र (ब्रम्हविद्याशास्त्र) के अनुसार एक सजीव शरीर में तीन आत्माओं का होना सहज है। इनमें से एक आत्मा न हिलती है न डुलती है न ही कार्य करती है, केवल तटस्थ रहती है । जीवात्मा, आत्मा तथा परमात्मा कहलाने वाले तीन आत्माओं में परमात्मा, रहने के अलावे कोई कार्य नहीं करता है। एक शरीर के अन्दर आत्मा तथा जीवात्मा नामक दो आत्माएँ ही कार्य करती हैं। शरीर के अन्दर में जीवात्मा ही, मैं फलाँ हूँ कहता है तथा मैं की भावना में शरीर के अन्दर सुख-दुख को अनुभव करता है। इसके अलावा शरीर के अन्दर जीवात्मा के लिए कोई काम नहीं है। शरीर के अन्दर हर कार्य को आत्मा ही करती है।यहाँ मुख्यरुप से कहने का विषय यह है कि **शरीर के अन्दर जीवात्मा के अलावा आत्मा का वास करना हो, या लिखना, कार्य करना, बातें करना, झगड़ना, खेलना समस्त कार्यों को आत्मा ही करती है यह किसी को ज्ञात नहीं है**। शरीर में अच्छे-बुरें कार्यों को करने वाली आत्मा ही है, परन्तु अनजानें में लोग समझते हैं कि वें स्वयं ही कर रहें हैं।

किसी को ज्ञात हो या न हो शरीर में आत्मा मुख्य भूमिका निभाती है। शरीर में जीवात्मा रहें तो आत्मा होना अनिवार्य है। इसलिए जीवात्मा के साथ आत्मा को जोडी़आत्मा कहना, बगल में होने की वजह से पडो़सीआत्मा या, पडो़सी कहना, शरीर में सारे अव्ययों को शक्ति देने की वजह से ताकत या शक्ति कह कर भी पुकारा जाता है। मरन समय में पूरे शरीर के अन्दर में प्रसारित शक्ति न होने की वजह से अर्थात् आत्मा चले जाने की वजह से शक्ति चली गई प्राचीन काल के आध्यात्मिक गुरु कहा करते थें। प्राचीन काल में आत्मा का अध्ययन करने वाले आध्यात्मिकवेंता शरीर में जीवात्मा को गणना में न लेकर, आत्मा को ही मुख्य रुप में परिगणना में लेते थे, मृत व्यक्ति को देख कर फलाँ व्यक्ति की शक्ति चली गई कहा करते थें। परन्तु वर्तमान काल में आत्मज्ञान से अनभिज्ञ लोग **शक्ति** शब्द के बदले में **मर** शब्द का उच्चारण करने लगे हैं। जैसे कि जानवर मर गया या आदमी मर गया कहा जा रहा है। उच्चारण में हो या लिखने में, मरना या मर गया शब्द का ही प्रयोग हो रहा हैं। इस प्रकार से भाव से ,भाषा से, अज्ञानता से, अज्ञानियों ने शब्द का फेर बदल कर दिया। अत; मर शब्द बदल हुआ शब्द है कह सकते हैं।

अब बिना बदलाव वाले **मरण** शब्द के बारें में विवरण करेंगें।इस शब्द में 'मर' की आवाज है "मर" अर्थात् नाश होने वाली। "रण" अर्थात् युद्ध। मर +युद्ध =मरण। मरण शब्द का अर्थ है नाश होने वाला युद्ध। शरीर का नाश होने में शुरु होने वाली क्रिया को मरण कहते है। जीवात्मा तथा आत्मा शरीर को छोड़ने के तुरन्त ही शरीर के अन्दर धातु कणों में युद्ध जैसी क्रिया शुरु हो जाती है। और तेजी से शरीर नाश होना शुरु हो जाता है।शरीर की समाप्ति होने वाली क्रिया युद्ध की तरह शीघ्रता से होती है, समझाने के लिए मरण कहा गया है।सब जानते हैंकि मरण मुख्यरुप से दो प्रकार के होते हैं। पहला काल मरण तथा दूसरा अकाल मरण। इन दोनों मरणों में शरीर नाश हो जाता है। यदि मानव शरीर का विभाजित कर देंखें तो नियम बद्धता से शरीर 24 भागों में है।जीवात्मा के साथ 25 भाग होते हैं।आत्मा के साथ 26 होते हैं।जीवात्मा के साथ ही आत्मा होती है। इसलिए आत्मा को छोड़कर जीवात्मा के साथ गिनती कर देखें तो कुल मिलाकर 25 भाग शरीर के अन्दर हैं।शरीर में विशेष कार्यों को करने के लिए विशेष भागों को सूत्र के अनुसार गिन कर देखें तो जीवात्मा के साथ 25 भागों की व्यवस्था है। 25 शरीर के भागों में से भौतिक रुप से 10 भाग प्रत्यक्ष हैं, अभौतिक रुप से 15 भाग प्रत्यक्ष हैं। प्रत्यक्ष शरीर भागों को स्थूल शरीर अप्रत्यक्ष शरीर के भागों को सूक्ष्म शरीर कहते हैं। स्थूल शरीर के 10 भागों को तथा सुक्ष्म शरीर के 15 भागों को नीचे देखिए।

स्थूल शरीर के भाग	**सूक्ष्म शरीर के भाग**	
1आँखें	1 जीव	11 व्यानवायु
2 नाक	2 मन	12 समानवायु
3 जीभ	3 बुद्धि	13 उदानवायु
4 कान	4 चित्त	14 प्राणवायु
5 चर्म	5 अहं	15 अपानवायु
6 हाथ	6 दृष्टि	

thraithashakam-36

7 पैर	7 श्रोंत्र
8 मुँह	8 स्पर्श
9 गुदा तथा	9 रस तथा
10 गुह्य	10 गंध

एक सजीव शरीर में 25 भागों का होना ही नहीं बल्कि, उन सभी को संचालन करने वाली आत्मा भी रहती है। काल मरण में स्थूल तथा सूक्ष्म शरीर के 24 भागों को छोड़ कर जीवात्मा तथा आत्मा चले जाते हैं। किन्तु स्थूल शरीर को छोड़ कर सिर्फ सूक्ष्म शरीर अर्थात् 14 भागों के साथ जीवात्मा तथा आत्मा के साथ होने को अकाल मरण कहते हैं। अकाल मरण में जीवात्मा, आत्मा तथा बाकि के 14 भाग का सूक्ष्म शरीर रहने की वजह से यह मरण नहीं होता है। मनुष्यों को प्रत्यक्ष स्थूल शरीर निर्जीव होने की वजह से, बाह्य रुप से मरण होने पर भी, इसे अकाल मरण ही कहेंगें। काल मरण में जीवात्मा तथा आत्मा दूसरा जन्म लेते हैं। अकाल मरण में जीवात्मा तथा आत्मा दूसरा जन्म नहीं लेते हैं।क्योंकि उनका सूक्ष्म शरीर रह जाता है।सूक्ष्म शरीर में जीवात्मा को कुछ समय और बीताना होता है।सूक्ष्म शरीर में श्वास चलता रहता है। स्थूल शरीर में श्वास (प्राण) न होने की वजह से, उसे सब लोग मरण मानने हैं, हालांकि उसे मरण नहीं कहा जा सकता है। शास्त्रबद्धता से मरण के लिए एक सिद्धान्त होता है। यदि श्वास शरीर से बाहर निकल कर वापस शरीर में प्रवेश न करें तो वह मरण होता है। इसे सौ प्रतिशत मरण ही कहा जाएगा। साधारणतया जब श्वास चलता रहता हो स्थूल शरीर को छोड़ने के बावजूद भी वह पूरा मरण नहीं होता है। वह अप्रत्यक्ष शरीर से जीवित रहता है।इस वजह से इसे अकाल मरण कहते हैं।अकाल मरण को प्राप्त व्यक्ति अप्रत्यक्ष होने पर भी वह हमारे साथ ही जीवित रहता है स्मरण रखें।

*****

thraithashakam-36

तात्कालिक मरण

काल मरण में जीवात्मा तथा आत्मा शरीर को छोड़ कर दूसरे जन्म के लिए चले जाते हैं। अकाल मरण में जीवात्मा तथा आत्मा आधे शरीर को छोड़ कर आधे शरीर में निवास करते हैं।मरण समझ कर गलतफहमी होना, उस तात्कालिक मरण के बारें में विवरण करेगें। तात्कालिक मरण को तीसरा मरण भी कहा जाता है। वास्तव में मरण न होते हुए इसे मरण कहना पड़ रहा है। इस तीसरे प्रकार के मरण अर्थात् तात्कालिक मरण में जीवात्मा तथा आत्मा स्थूल तथा सूक्ष्म शरीर को न छोड़ कर शरीर के अन्दर ही रहते हैं। काल तथा अकाल मरणों में जीवात्मा स्थूल शरीर को छोड़ने की वजह से शरीर के अन्दर की हरकतें रुक जाती है।इसलिए बिना हरकतों के ,बिना श्वास के, शरीर को देख कर इनकी मृत्यु हो गई कहा जाता है। तात्कालिक मरण में जीवात्मा यदि शरीर को छोड़ कर न जाए तो, लोग उसे मरण क्यों कहते है, ऐसा कुछ लोग सवाल कर सकते हैं। इसका जवाब ऐसा है। मरण सिद्धान्त रुपी होने के बावजुद भी दुनिया के सामने जो प्रत्यक्ष दिखलाई दें उसी पर ही विश्वास करती हैं। अन्तिम श्वास निकलने से ही काल मरण होता है अनेक लोगों को मालूम नहीं है। कुछ लोग ऐसा भी पुछ सकते हैं जैसे कि श्वास रुक जाए उसे ही आखिरी श्वास छोड़ना कहते हैं न। पहला यानि काल मरण में ही सिर्फ अन्तिम श्वास निकलता है, जिसे मनुष्य का मरण होना कहते हैं।लेकिन दूसरा अर्थात् अकाल मरण में मनुष्य के अन्तिम श्वास के बारें में कुछ नहीं कह सकते हैं।क्योंकि प्रत्यक्ष स्थूल शरीर में श्वास न चलने के बावजुद, अप्रत्यक्ष सूक्ष्म शरीर में श्वास चलता रहता है। अत; इसे मरण नहीं कह सकते। इसके अलावा तीसरा तात्कालिक मरण में सिद्धान्त के अनुसार शरीर को छोड़ कर श्वास बाहर नहीं निकला, इसलिए इसे मरण कहने की कोई गुंजाइश ही नहीं है। परन्तु विशेष बात यह है कि शरीर में बिना श्वास चले, रुक जाने की वजह से, लोग तीसरा मरण अर्थात् तात्कालिक मरण को मरण कहते हैं।

मरण सिद्धान्त के अनुसार आखिरी श्वास से जीवात्मा शरीर को छोड़ कर चले जाता है पहले भी इसकी चर्चा कर चुके हैं। एक काल मरण में ही आखरी श्वास होता है।अकाल मरण में अन्तिम श्वास न रहकर यथा प्रकार से श्वास सूक्ष्म शरीर में चलता रहता है। इसलिए दूसरे में भी श्वास का न होना कह

सकते हैं। अब तीसरे मरण में भी शरीर में ही श्वास ठहर जाने की वजह से मनुष्य मरा हुआ दिखलाई देने के बावजुद भी श्वास बाहर नहीं जाता है। और जीवात्मा तथा आत्मा दोनों शरीर को छोड़ कर नहीं जाते हैं। तात्कालिक मरण में अन्दर में ठहरा श्वास फेफड़े के अन्दर ही ठहर जाता है। श्वास बाहर न निकल कर ठहर जाने की वजह से धड़कने रुक जाती है। धड़कने रुक जाने की वजह से रक्त का संचार रुक जाता है, रक्त का संचार रुकने की वजह से शरीर के अन्दर नब्ज भी कार्य करना बंद कर देता है, मस्तिष्क में चैतन्य टहर जाती है। इससे शरीर बिना संचलन के, बिना श्वास के रह जाता है। और प्रत्यक्ष में बाहरी लोगों को मृत नजर आता है , हमारे मुताबिक सिद्धान्त के अनुसार यह मरण नहीं है। क्योंकि शरीर के अन्दर ही श्वास ठहर गई, यदि बाहर निकल कर ठहरी होती तो वह उनका आखिरी श्वास होता। लेकिन श्वास भीतर ही ठहर गई, इस का वजह यह आखिरी श्वास नहीं था। इसलिए यह मरण नहीं हो सकता कह सकते हैं। ऐसे समय में जीवात्मा की स्थिीति कैसे होती है?, उसे क्या कहते है? कई लोग पुछ सकते हैं। इसका जवाब इस प्रकार है!उस समय में जीव निद्रा की स्थिीति में होता है। उस समय में साँसें चलती नहीं है, इसलिए बाह्य रुप से देखने में यह मरण जैसी दिखलाई पड़ता है। वैध भी इसे मरण ही मानेंगें। इसलिए हमने इसका नाम तात्कालिक मरण रखा।

तात्कालिक मरण कुछ लोगों को कर्मानुसार मिलता है। इस मरण को प्राप्त व्यक्ति कुछ समय तक नींद में कई घंटें,या कई दिनों, या कई महीनों तक रहने के बाद जागता है।हालांकि इस विषय से सब अनजान हैं। इसलिए तात्कालिक मरण को प्राप्त व्यक्ति सच में मृत्यु को गई भ्रमित हो कर उसका अन्तिम-संस्कार कर देते हैं। अन्तिम-संस्कार करना, अप्रत्यक्ष हत्या करनी जैसे होती है। तात्कालिक मरण को प्राप्त व्यक्ति के शरीर के अन्दर जीवात्मा रहने तक शरीर सड़ता नहीं है। शरीर ठंडा पड़ जाए, या शरीर का रंग बदल जाए, या शरीर में कोई संचलन न होने पर भी वह शरीर सड़ता नहीं है। तात्कालिक मरण जब से धरती पर प्राणीयों ने जन्म शुरु किया तभी से है। पूर्व काल में कुछ लोगों ने इसे पहचाना भी। कई लोग तात्कालिक मरण को पाकर दोबारा जीवित भी हुए हैं। कुछ लोगों को तात्कालिक मरण बिना जानकारी में होता है। कुछ लोगों को जानकारी में प्राप्त होता हैं।

*****

तात्कालिक मरण – ब्रम्हयोग ?

तात्कालिक मरण का विवरण कर देखें तो भगवत गीता में वर्णन किए ब्रम्हयोग जैसी होती है, ब्रम्हयोग में सारें बाह्य ज्ञानेन्द्रियाँ ठहर कर, श्वास स्तंभित होकर , धड़कने रुक जाती हैं। तात्कालिक मरण में भी यही सब लक्षण दिखाई पड़ते है। बाहर से ब्रम्हयोग, तथा तात्कालिक मरण दोनों एक जैसा दिखलाई पड़ने के बावजुद भी भीतर में जीवात्मा में सिर्फ थोड़ा अन्तर रहता है। तात्कालिक मरण को प्राप्त जीवात्मा स्मृति लोप में रहता है। ब्रम्हयोग को प्राप्त जीवात्मा जागृतावस्था में रहता है। **स्मृतिलोप अर्थात् निद्रा**, **जागृतावस्था अर्थात् योग**। ब्रम्हयोग को प्राप्त व्यक्ति हो, या तात्कालिक मरण को प्राप्त व्यक्ति हो, बाहर से देखने में दोनों की एक ही स्थिीति होती है। इसलिए कौन योग में है, कौन मरण में है कहना मुश्किल हैं। ब्रम्हयोग को प्राप्त व्यक्ति हो , या तात्कालिक मरण को प्राप्त व्यक्ति हो वापस प्राण से उठ सकते हैं। इसलिए दोनों व्यक्तियों को तात्कालिक मरण प्राप्त हुआ कहना गलत नहीं हैं। ब्रम्हयोग को एक तरह से तात्कालिक मरण भी कह सकते हैं।ब्रम्हयोग या तात्कालिक मरण होना योगी की जानकारी में होती हैं। यदि कोई योगी न होकर साधारण मनुष्य हो तो, अनजाने में तात्कालिक मरण प्राप्त करता है। तात्कालिक मरण जैसी ही ब्रम्ह्योग प्राप्त योगी जितना समय योग में रहना हो निर्णय कर ब्रम्हयोग आरम्भ करता है। एक उद्देश्य से आरम्भ कर कुछ समय के बाद बाह्य स्मरण में आता है। परन्तु अनजाने में तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्ति का कोई अपना निर्णय नही होता है, इसलिए उनको बाह्य स्मरण कब आ जाए कह नहीं सकते है। ब्रम्हयोगी का योग में बैठना, उनका योग का आचरण करना ,यह सब बाहरी लोगों को मालूम होने की वजह से ब्रम्हयोगी जितने समय तक भी योग में बैठे रहे परवाह नहीं होती। बाहरी लोग उन्हें योगी ही समझेंगें। ब्रम्हयोगी न होकर, यदि साधारण मनुष्य तात्कालिक मरण को प्राप्त करें तो, उनके शरीर में ही श्वास ठहरने की वजह से, दूसरे इंसान उन्हें मरा हुआ समझकर , उनका अन्तिम-संस्कार कर देंते हैं।

तात्कालिक मरण को प्राप्त व्यक्ति के शरीर के अन्दर की सारी क्रियाएँ ठहर कर उनकी मस्तिष्क के अन्दर की शक्ति पूरे शरीर को छोड़ कर मस्तिष्क में केन्द्रीत हो जाती है। जीवित सामान्य व्यक्ति की आत्मशक्ति पूरे शरीर में व्याप्त होती है। तात्कालिक मरण को प्राप्त मनुष्य की आत्मशक्ति सिर के अन्दर

मष्तिष्क के मध्य भाग में ठहर जाती है। सूत्र के अनूसार आत्मा शरीर के अन्दर रहने तक जीवात्मा भी शरीर के अन्दर ही रहता है। आत्मा, जीवात्मा दोनों जोड़ी आत्माएँ हैं पहले भी कई बार कहा गया। जीवित शरीर में एक आत्मा होती है तो दूसरी आत्मा भी होनी चाहिए। अतएव मस्तिष्क के मध्य भाग में आत्मशक्ति ठहर जाने की वजह से जीवात्मा अपने स्थान में ही रहती है। सब को शक्ति देने वाली आत्मा पूरे शरीर में रह कर अपनी शक्ति को मस्तिष्क के मध्य भाग में ठहरा कर शरीर के अन्दर में किसी भी भाग में शक्ति का प्रसार न करने की वजह से मन भी कार्य नहीं करता है। मन कार्य न करने की वजह से जीवात्मा कुछ जान नहीं पाता है और निद्रास्थिीति में चले जाता है।तात्कालिक मरण को प्राप्त जीव वापस बाह्य स्मरण आने तक निद्रास्थिीति में ही रह जाता है। जीवित लोगों की नींद कुछ घंटों की होती है। लेकिन तात्कालिक मरण में नींद कई दिनों या कई महीनों की हो सकती है। कितने दिनों तक इस प्रकार से निद्रा होगी कहना असंभव है। तात्कालिक मरण को प्राप्त व्यक्ति कितने दिन इस स्थिीति में रहेगा यह उनकी आत्मा पर निर्भर करती है। उनकी आत्मा द्वारा तात्कालिक मरण का काल निर्णय होता है।

मस्तिष्क के मध्य भाग में चार चक्रों का समुदाय के अन्दर आत्मा धुरा होकर रहती है। चारों चक्र अगोचर होते हैं। उनका आधार आत्मा भी अगोचर होती है। चारों चक्रों में से नीचे के चक्र में जीवात्मा रहता है। ये चारों चक्र सिर के मध्य में रहने तक जीवात्मा उस शरीर को छोड़ कर नहीं जा सकता। तात्कालिक मरण को प्राप्त मनुष्य की आत्मशक्ति शरीर से मुकुलित होकर चार चक्रों के पास ठहर जाती है। आत्मशक्ति पूरे शरीर में न रह कर चार चक्रों के मध्य ठहरने से चारों चक्रों में से नीचे के दो चक्र गुण तथा काल चक्र भी बिना हिले ठहर जाते हैं।इस वजह से उस शरीर में गुण हो, या कर्म, आचरण में न आकर ठहर जाते हैं। तात्कालिक मरण को प्राप्त जीवात्मा बिना किसी गुण के, तथा बिना किसी कर्म को भोगे निद्रा स्थिीति में रह जाता है। यही स्थिीति ब्रम्हयोग में भी होती है। वहाँ मन जागृतावस्था में रहती है। तात्कालिक मरण में मन कार्य न करने की वजह से उस स्थिीति को निद्रा की स्थिीति ही कहते हैं। चार चक्रों के समुदाय को चित्र में देखें।

काल मरण में आखिरी श्वास रुकते ही शरीर से चार चक्र ही बाहर जाते हैं सिद्ध होता है।चार चक्र में धुरा होकर आत्मा, नीचे के चक्र में जीवात्मा, नीचे के चक्र के अन्दर में ही गुणों, उसके ऊपर के चक्र में कर्म होता है। सब मरण होते ही बाहर निकलकर दूसरे शरीर में पहुँच कर जीवात्मा को जन्म प्राप्त करवाती हैं।लेकिन तात्कालिक मरण में वैसा नहीं होता है।हम कह सकते हैं कि तात्कालिक मरण साधारण काल मरण जैसा दिखाई पड़ने पर भी यह ब्रम्हयोग जैसी होती है।जिस तरह से योग जैसी तात्कालिक मरण में मनुष्य का कर्म समाप्त नहीं होता है, उसी तरह से कर्म अर्जित भी नहीं होता है। ब्रम्हयोग में हो या तात्कालिक मरण हो बाहर होने वाली प्रक्रिया कुछ भी दिखाई नहीं देती है

*****

तात्कालिक मरण सभी प्राणियों में होता है ?

हमारे अब तक सूचित किए गए तात्कालिक मरण का विषय कई लोगों को नया, तथा आश्चर्यजनक लगने पर भी, इस मरण को एक इंसान ही नहीं बल्कि अनेक प्राणियों ने भी प्राप्त किया सिद्ध किया गया। कई प्रांतों में छोटे-छोटे प्राणीयों ने तात्कालिक मरण को कई बार प्राप्त किया। तात्कालिक मरण को प्राप्त करने वालों में मेंढ़क तथा छोटे-छोटे टिड्डों की अनेक जातियाँ हैं कह सकते हैं। कई मेंढ़क जमीन के अन्दर समाधि हो गए, जमीन को खुदाई करते समय में लोग देखते होंगें। दस, पन्द्रह, या बीस फुट की गहराई में भी मेंढ़कघोंसला देखा गया। बीस या तीस फुट की गहराई में कैसे जीवित था? कितने समय से था? उसे आहार कैसे मिला होगा? ऐसे प्रश्न यदि विज्ञान के शास्त्रीयों से पुछा जाए तो वे उसका जवाब दिए इसे बिना विवरण का रहस्य (UN EXPLAINED MYSTERIES) कह कर टाल सकते हैं। इसके बारें में हमारा कहना है जमीन की गहराई से बाहर निकला मेंढ़क जमीन के अन्दर तात्कालिक मरण में था, वह मेंढ़क किसी समय में, या किसी एक घटना में दब गया होगा, जैसे ही बाहर निकला वापस होश में आकर हिलने लगा, इस प्रकार से कई हजारों, लाखों वर्षों से वह वैसे ही रह गया हमारा मानना है। उसका वैसा रहना कैसे संभव हुआ? ऐसा कई लोगों को सन्देह हो सकता है। इसका जवाब ऐसा है।

thraithashakam-36

तात्कालिक मरण को प्राप्त करने वाला कोई भी प्राणी हो,या कोई भी मनुष्य, कितना समय तक रहेगा निर्णय नहीं रहता है हमनें पहले भी कहा था। मेंढ़क के विषय को लें तो मेंढ़क के सिर के अन्दर चार चक्रों का चालक आत्मा ने, मेंढ़क मिट्टी में दबते समय उसका तात्कालिक मरण प्राप्त करवाया। मिट्टी में दबा मेंढ़क ने तात्कालिक मरण होने से पहले ही अपने चारों तरफ के मिट्टी को अपनी जीभ से चाट कर, थोड़ी मिट्टी खाकर, अपने चारों तरफ जगह बना कर, खुद को सुरक्षित करने के लिए छोटा सा घोंसला तैयार करता है। अपने चारों ओर थोड़ी जगह बना कर ठहर जाता है। ठहरने के तुरन्त बाद तात्कालिक मरण हो जाता है। पश्चात् वह निद्रास्थिीति में चला जाता है, किन्तु जीवित स्थिीति नहीं। बिना हरकत के ठहरा मेंढ़क के शरीर के अन्दर आत्मा, उस शरीर के अन्दर के सारे कार्यों को रोक देने की वजह से, वह मेंढ़क का आकार बिना बढ़े रुक जाता है। मिट्टी में धँस जाने के दिन मेंढ़क जितना आकार का था, कई हजारों वर्षों के बाद भी बाहर आने के दिन भी उतना ही आकार का पाया गया, उस दिन जितनी उम्र थी, उतनी ही उम्र बाहर आने के दिन थी। मिट्टी में दबने वाले दिन में जिस जाति की मेंढ़क थी , बाहर आने के दिन भी उसी जाति की मेंढ़क पायी गयी।कई प्रान्तों में प्राचीन काल के मेंढ़क जो वर्तमान काल में लुप्त थे वें मेंढ़क उसी प्रान्त में खुदाई करते समय पायें गए, इसका कारण उस जाति के मेंढ़क वर्तमान काल के नहीं, बल्कि पूर्व काल के थे सिद्ध होता है। उनके न रंगों में फर्क था, न ही आकार में कोई फर्क था। खुदाई होते समय में हमनें देखा था। वर्तमान काल में लुप्त हुए मेंढ़क जातियाँ, जो पूर्व काल में थी उनका तब से अब तक रहना, सिद्ध होता है।

फेफड़ा बिना कार्य किए, हृदय बिना धड़के, एक प्राणी शरीर के साथ कितने दिनों तक सजीव रह सकता है ? ऐसा प्रश्न हर कोई कर सकता है। इसका जवाब इस प्रकार से है। इस विषय के बारें में भौतिक शास्त्र द्वारा ज्ञात किया नहीं जा सकता है। भौतिक शास्त्र प्रत्यक्ष भौतिक शरीर से मात्र संबंधित होता है। इसलिए भौतिक शास्त्रीयों के लिए इस विषय में कह पाना मुश्किल है। तात्कालिक मरण भौतिक शास्त्रीयों के लिए यह असमंजस्य का विषय है। इसलिए इस विषय को बिना विवरण वाला रहस्य कहा गया। हर विषय में शास्त्रबद्धता होनी चाहिए। और तभी उसकी वास्तविकता ज्ञात होगी। बाह्य रुप से मरण होना, अन्दर कितने समय तक जीने के विषय में वास्तविकता जाननी हो तो ब्रम्हविद्या शास्त्र को अवश्य जानना होगा । ब्रम्हविद्या शास्त्र षठ् शास्त्रों में सबसे बडा़ है। ब्रम्हविद्या शास्त्र के अनुसार शरीर के अन्दर आत्मा को शरीर

पर पूरा अधिकार रहता है।परन्तु जीवात्मा बिना अधिकारों के रहता है।आत्मा अकेली ही शरीर, तथा जीवात्मा, पर शासन कर संचालन कर सकती है। मेंढ़क के शरीर में भी आत्मा ही वास करती है।मेंढ़क के शरीर की अधिकारी आत्मा ने, चारों चक्रों का ठहराव करते हुए उसकी जीवन व्यवस्था का भी ठहराव कर दिया। मेंढ़क के शरीर के अन्दर में जीवात्मा को चौथे चक्र अर्थात् गुण चक्र में ठहरा दिया गया। मेंढ़क के शरीर की उष्णता, तथा सारे हरकतों को अपने में दबा लिया। आवश्यकता पड़ने पर शरीर में हरकतें लाना, तथा उष्ण दे सके। आत्मा, चारों चक्रों को बिना हिले जितने दिनों तक भी रुकवा सकती है। बाद में जब चक्रों को हिलाना चाहें तब ब्रम्हनाड़ी द्वारा चैतन्य शरीर के अन्दर फैल कर शरीर को हिला सकती है। और तभी शरीर के अन्दर गर्मी भी फैलती है। तब तक ठहरा हुआ रक्त का संचार दोबारा शुरु होने से हृदय धड़कना प्रारम्भ हो जाता है। और तब जीवात्मा निद्रा से जाग कर जाग्रत अवस्था में आता है। उस वक्त तक कितना समय हुआ जीवात्मा को, या मन को, या बुद्धि को ज्ञात नहीं रहता है। निद्रा से जागने जैसा जीवात्मा को ज्ञात होता है, परन्तु कितना समय बीता ज्ञात नहीं हो पाता है। उन्हें मरण होने जैसी कोई अनुभुति नहीं होती है।इस प्रकार से ब्रम्हविद्या शास्त्र के प्रमाण से हम लोगों को तात्कालिक मरण का होना सिद्ध होता है। इसे बिना शास्त्रबद्ध विषय न समझें

*****

ईसा का मरण कैसा था ज्ञात है ?

ईसाई मत (धर्म) के कर्ता ईसा मसीह का मरण शूली पर हुआ था लोगों को कहते हुए हमने सुना था। उन्होंने काल मरण को प्राप्त किया था ? या अकाल मरण को प्राप्त किया? या तात्कालिक मरण को प्राप्त किया? पुछ रहा हूँ। ईसा मसीह के मरण से संबंधित तीन प्रश्न होंगें शायद किसी ने सोचा नहीं होगा। उनके धर्म में किसी भी बोधक ने उनके मरण के बारें में योचना नहीं की होगी। इसके बावजुद हमारा मानना है ।ईसा मसीह का न काल मरण था , न अकाल मरण हुआ था। उनका तात्कालिक मरण हुआ था। ईसा का मरण वहाँ खड़े लोगों की जानकारी के बिना ही मौत हो गई। ईसा की मृत्यु का निर्धारण करने के लिए, एक

thraithashakam.36

सैनिक ने सूली पर सिर झुकाए मृत मसीहा के पेट में भाले से भोंका , भाले से भोंकने पर ईसा में कोई हरकत नहीं हुई, और उनका मौत हो जाने का निर्धारण हुआ। इस प्रकार से उनकी मौत हुई जानकर बाद में उनके शव को दूसरों को सौंपा दिया गया। वहाँ आश्चर्य वाली बात यह है कि, उनका मौत होने का निरुपण हुआ था। हमारे कथनानुसार उन्हें मरा हुआ मानने के लिए भाले से जब भोंका गया उनमें कोई संचलन नहीं था। अगर जीवित होते तो थोड़ा भी हिले होते या कराहते, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, इसलिए दुनिया की नजरों में उनकी मृत्यु हुई। दुनिया की नजरों में भी मरा हुआ मानने के लिए भी आधार हैं। मृत व्यक्ति के शरीर में रक्त जम जाता है। जब एक सैनिक ने भाले से उनकी पसलियों में भोंका तो घाव से खून बहा था, ज्ञात हुआ। इस प्रकार से खून का बहना मतलब दुनिया की नजरों में संदेह उत्पन्न कर सकता हैं।इस वजह से ईसा मसीह के मरण से लोगों में, उनकी मौत हुई भी या नहीं हुई भी, दो तरह से संदेह उत्पन्न करता है। वास्तव में वहाँ क्या हुआ था, योचना करने से ज्ञात हो सकता है।

ईसा मसीह ने मरते समय में (योहनु सुवार्ता 19 वें अध्याय 30वें वचन में) " समाप्त हुआ कह कर सिए झुका कर आत्मा को सौंपा " ऐसा लिखा हुआ था। (लूका 23 वें अध्याय 46 वें वाक्य में) " पिता आपके हाथों में मेरी आत्मा को सौंप रहा हूँ। उन्होंने ऐसा कह कर प्राण त्याग दिए " इन दोनों वाक्यों में ईसा अंत में कहे कथन का विवरण करके देखें तो इस प्रकार से समझ में आ सकता है। यीशु जानते थे कि उनके शरीर में उनके अलावा उनका अधिकारी भी रहता है। परन्तु मनुष्य समझता है मेरे शरीर में मेरे अलावा दूसरा कोई नहीं है। लेकिन सम्पूर्ण देवज्ञान (परमात्माज्ञान) जानने वाले ईसा मसीह जानते थे कि उनके शरीर में उनका बड़ा, उनका परमात्मा, उनका पड़ोसी, उनका अधिकारी बन कर संचालन करने वाला दूसरा कोई है, इसलिए अंत में सूली पर मेरी आत्मा को तुम्हें सौंप रहा हूँ कहा । यहाँ पर यीशु की आत्मा जीवात्मा है, उसकी अधिकारी दूसरी आत्मा है। ईसा मसीह के शरीर को दूसरी आत्मा ही संचालन करती है। केवल उनका ही नहीं हमारे शरीरों के अन्दर भी हमारी आत्मा (जीवात्मा) को दूसरी आत्मा ही संचालन करती है। शरीर के अन्दर हम पहली आत्मा है, हमारे शरीर का संचालन करने वाली दूसरी आत्मा है सिद्ध हुआ। यही पद्धति समस्त प्राणियों पर लागू होने का सिद्धान्त है सिद्ध हुआ। जो ज्ञानी होता है वह जानता है मैं किसी का कर्ता नहीं हूँ सभी का कर्ता आत्मा ही है। ईसा महाज्ञानी थे इसलिए अंत में मरण आसन्न होने पर भी मेरी आत्मा को तुम्हें सौंप रहा हूँ, तुम जो करना चाहते हो तेरी मर्जी ,कह कर शरणागत हो गया। हर एक

मनुष्य हर विषय में इसी प्रकार से रहें, अपने आप को कर्ता न मानें, महान ज्ञान संदेश को यीशु ने अंत में दुनिया को सूचित किया।

यीशु के इस प्रकार से कहने के पश्चात् उनके शरीर में व्याप्त आत्मशक्ति शरीर से ब्रम्हनाड़ी में पहुँच कर वहाँ से सिर के मध्य भाग में पहुँच गई। उस समय मे शरीर के अन्दर के सारे अन्तर्गत कार्य ठहर गए, बाहर से मृत शरीर जैसी तैयार हुई। भीतर में आत्मा जैसे चाहें वैसे ही होता है। क्योंकि पूरे शरीर में आत्मा ही अधिकारी, अधिपति होती है। स्तंभित हुआ यीशु का शरीर के अन्दर खून न जम सके आत्मा ने ही किया। इस वजह से सैनिक ने यीशु के शरीर पर भाले से भोंकने पर घाव से खून बह रहा था। रक्त नहीं जमा, इसलिए यीशु का मरण नहीं हुआ संदेह उत्पन्न हो सकें आत्मा ने किया। यीशु का शरीर स्तंभित होकर श्वास नहीं चल रहा मृत्यु हो गयी ,यकीन करवाना भी आत्मा ने ही किया। इस तरह दो प्रकार से सन्देह उत्पन्न होना, यीशु के मरण के बारें में योचना कर उन रहस्यों को ज्ञात कर सकें, आत्मा द्वारा किया गया। परन्तु दुनिया ने उसके अन्दर के अंतर्बोध को समझे बिना, कई लोग जो नहीं ईसाई हैं " ईसा सूली पर मरे नहीं थे,उन्होंने मरने का नाटक किया था। उनका मरना सब लोगों ने विश्वास कर यीशु को समाधि में रखा। समाधि में एक दिन विश्राम कर वापस लौट आए थे। उन्होंने मरण पर विजय नहीं पाया था। ईसा मरण पर विजयी होकर लौटे थे, ईसाईयों का मानना असत्य है। क्योंकि ईसाईयों ने मसीहा को मरण पर विजयी परमात्मा मानना उनके धर्म का प्रचार करने के लिए था, वे न ही मरे थे, न जीवित हुए थे " कहते है।

वास्तव में क्या मसीहा की मृत्यु नहीं हुई ? ऐसा यदि हमसे कोई पुछे तो, उनके शरीर के अन्दर सभी अव्यव स्तंभित होकर, न श्वास चल रहा था, न ही ह्रदय में संचलन हुआ, भौतिक सुत्र के अनुसार हम कह सकते हैं यीशु की मृत्यु हुई थी। वास्तव में उस समय यीशु की मृत्यु हुई थी, इस कथन में कहीं भी असत्य नहीं है इसे हम भी कह रहें हैं। बिना किसी पक्षपात के, शास्त्रबद्धता से सत्य ही कहना पड़ा तो एक पद्धति के अनुसार देखें तो भौतिक शास्त्र के सुत्रानुसार मृत व्यक्ति का रक्त बिना जमे तरल नहीं होता है। इसलिए उनकी मृत्यु नहीं हुई कह सकते हैं। दूसरी पद्धति से देखें तो वही भौतिक शास्त्रानुसार शरीर में धड़कने रुकना, श्वास रुकना, व्यक्ति को मृत बताता हैं।इसलिए ईसाईयों के लिए यीशु की मृत्यु हो गई मानना सत्य है तथा दूसरों ने यीशु की मृत्यु नहीं हुई कहना भी सही है।। परस्पर विरुद्ध घटनाओं में शास्त्रबद्धता

कैसी हो सकती हैं। कोई भी प्रश्न कर सकता है। क्योंकि शास्त्र में परस्पर विरुद्ध सुत्र नहीं हो सकते हैं। इसलिए ईसा मसीह के मरण के बारें में यथार्थ ज्ञात करनी हो तो , पहले षठ (छ ;) शास्त्रों में से किस शास्त्र का अनुसरण करें पहले जान लेनी चाहिए।यदि उस प्रकार से जानकारी करें तो उनके मरण के विषय में भौतिक शास्त्र को आधार मान कर नहीं चलना चाहिए। केवल प्रत्यक्ष शरीर तक सीमित हो तो भौतिक शास्त्र द्वारा कर सकते हैं। किन्तु यहाँ अप्रत्यक्ष जीवात्मा, आत्मा का विषय भी है। इसलिए उनके मरण को छठ्वें ब्रम्हविद्याशास्त्र के अनुसार ही करना चाहिए। क्योंकि ब्रम्हविद्या शास्त्र के अनुसार ही मरण का विषय समझ में आएगा।

ब्रम्हविद्या अर्थात् बड़ी विद्या। ब्रम्हा अर्थात् बड़ा, ब्रम्हविद्या शास्त्र अर्थात् बड़ी (महान)विद्या शास्त्र। हमें स्मरण रखना होगा कि इस धरती पर हमारे लिए शास्त्र केवल छ ; ही हैं।1)गणित शास्त्र 2) खगोल शास्त्र 3) रसायन शास्त्र 4) भौतिक शास्त्र 5) ज्योतिस शास्त्र 6) ब्रम्हविद्या शास्त्र । इनके अलावा दूसरा कोई शास्त्र नहीं होता हैं। इन छ ; शास्त्रों के अनुसंधान शास्त्र हो सकते हैं। किन्तु षठ् शास्त्रों को अलावा धरती पर कोई भी पुस्तक शास्त्र नहीं कहलाता। यदि हो,तो वे शास्त्र नहीं हैं। वनस्पति शास्त्र भी होता है यदि कोई पुछे तो वह भौतिक शास्त्र से संबंधित होता है कहिए । अब मूल विषय की चर्चा करेंगें। ब्रम्हविद्या शास्त्र भगवत गीता में पुरुषोत्तम प्राप्ति योग, अध्याय के आठ्वें श्लोक

" शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वर; ,
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ।"

ऊपर दिए गए श्लोक का सारांश इस प्रकार से है। " जब जीवात्मा शरीर को छोड़कर जाता है, उनके साथ अधिपति या ईश्वर के रुप में आत्मा चार चक्रों की छतरी में जीवात्मा, गुणों, तथा कर्म को लेकर जैसे वायु में गन्ध, दिखाई दिए बिना, किसी की जानकारी के बिना दूसरे शरीर में चली जाती है।"

ऊपर दिए गए श्लोक के प्रमाणानुसार शरीर की अधिपति आत्मा अपने साथ जीवात्मा, कर्मों,तथा गुणों को ले जाने को मरण कहा जाता है। यदि एक बार आत्मा शरीर को छोड़ दे तो वह मरण होगा। एक बार मरण से उस शरीर के अन्दर आत्मा का प्रवेश दोबारा नहीं होता । यह शास्त्रबद्ध सूत्र है। यदि आत्मा शरीर को एक बार छोड़

जाए तो दोबारा दूसरे शरीर में प्रवेश करती हैं, किन्तु पुराने शरीर में प्रवेश करना निषेद है, यही शास्त्र है, उसमें भी बड़े शास्त्र का सुत्र है, इसलिए यह अपरिवर्तित है, ईसा मसीह के शरीर के अन्दर आत्मा शरीर को छोड़ कर नहीं गई । इसलिए इसे काल मरण नहीं कह सकते हैं। ईसा के शरीर के अन्दर में सारी हरकतें ब्रम्हनाड़ी के अन्दर आत्मा में दब गए ।आत्मचैतन्य उनके सिर के भाग में ठहर गई, इसलिए उनका तात्कालिक मरण हुआ था , मरण नहीं। तात्कालिक मरण में बाहर से मनुष्य मृत दिखलाई पड़ता है। इसलिए सबने कहा यीशु की मृत्यु हो गयी । भौतिक शास्त्र के अनुसार कई लोगों ने कहा " रक्त जमा नहीं है इसलिए वे जीवित है "। यहाँ पर भौतिक शास्त्र से समस्या का समाधान नहीं हो सकता है। क्योंकि यह आत्मा से संबंधित जन्म और मृत्यु का विषय हैं। इसलिए इसे ब्रम्हविद्या शास्त्र से ही परिष्कार करना चाहिए। **ब्रम्हविद्या शास्त्रा के अनुसार यीशु निद्रावस्था में जाकर तात्कालिक मरण होने के कारण बाह्य रुप से मरना, आँतरिक रुप में जीवित ही समझा जायेगा**

सिर के अन्दर में दबी आत्मा रक्त को जम जाने से रोक सकती है। परन्तु यीशु के मरण से, मरण विषय को दुनिया को समझाने के हेतु , जान बुझकर आत्मा ने इस प्रकार से किया। इससे यीशु का मरण दुनिया को हाँ, न, के संदिग्ध में डाला गया। इसके बावजुद इसके बारें में किसी ने भी योचना करके शास्त्रबद्धता से समाधान नहीं दिया ।

यीशु की मृत्यु हो गयी निर्धारण के बाद , सूली पर से उनके शरीर को उतार कर समाधि में रखा गया। समाधि अर्थात् मिट्टी में दफनाना नहीं था। पत्थर की गुफा को उस वक्त समाधि कहते थें। यीशु के शरीर को पत्थर की गुफा में रखकर, उस गुफा के द्वार को एक पत्थर से ढ़क दिया गया। यीशु को शुक्रवार सुबह 9 बजे सूली पर पर चढ़ाया गया, उनकी दोपहर 3 बजे मृत्यु हो गई, शाम को उन्हें पत्थर की गुफा में रखकर बंद कर दिया गया। पूरे शनिवार यीशु निद्रावस्था में रह गए। रविवार सूर्योदय से पहले यीशु के देह में आत्मा अपनी शक्ति को पूरे शरीर में संचार किया। और तब यीशु के शरीर के अन्दर में हृदय हिला और कार्य करना शुरु किया, रक्त का संचार, तथा श्वास का चलना प्रारम्भ हुआ। उस समय में ईसा को निद्रा से स्मरण में आना, आत्मा द्वारा किया गया , ईसा जाग कर बैठ गए उन्हें सूली पर लटकाना बाद में निद्रा में चले जाना समझ में आया । यीशु पूरे शनिवार समधि में निद्रा में थे। इसलिए इस दिन को विश्राम दिन कहा

जाता है। अपने जीवित होने के बारें में अपने शिष्यों को सूचित करने के लिए चल पड़े। पहले मग्धलेन मरिया से बातें कर , बाद में अपने शिष्यों से मिलने गए। शिष्यों ने उन्हें देख कर भूत समझा तथा उनका अपमान किया , " **नहीं, मैं आपका पहलेवाला ईसा ही हूँ** " कहकर उन्हें अपने शरीर के ऊपर घावों को सबूत के तौर पर दिखलाया। यह देखकर वहाँ पर आया सूली पर कीलों से घायल ईसा मसीहा ही है उनके शिष्यों ने पहचाना । उनके शरीर के उपर निशान सूली पर चढ़ाया गया शरीर ही था कहने के आधार से था। **इस तरह से ईसा का सूली पर मरना, वह सबकी जानकारी का, न हीं कालमरण था, न हीं किसी के बिना जानकारीवाला अकालमरण था, बल्कि यह हर किसी के लिए कल्पना से दूर का रहस्यमयी तात्कालिकमरण था ज्ञात हुआ ।**

*****

तात्कालिक मरण किसी के साथ भी हो सकता है?

तात्कालिक मरण उनके अपने कर्मों से किसी भी प्राणी के साथ हो होता हैं। जन्में हर प्राणी के लिए कालमरण अनिवार्य होता है। अकालमरण हो भी सकता है, या नहीं भी हो सकता है। परन्तु तात्कालिक मरण का अनिवार्य होना कहा नहीं जा सकता है। कर्नानुसार ही सब कुछ तय रहता है। यदि कर्म उस प्रकार का हो तो किसी भी प्राणी के लिए तात्कालिक मरण होना अनिवार्य होगा। इस विषय में लोगों को कितना भी समझाया जाए यकीन नहीं करेंगें। वैसे लोग इस सच्चाई को समझें, इसलिए कई प्रकार के कीटों में अनिवार्य रुप से तात्कालिक मरण होना उनके कर्म में व्यवस्था रहती है। (Cryogenic Bugsicies) नामक एक प्रकार का टिड्डा कीट बर्फीले प्रान्त में जीवन यापन करता हुआ, बरफ न रहने के समय में आसनी से जीवन व्यतीत करता है। शीतकाल में बरफ की अधिकता से बरफ में दब कर मर जाता है। मरे हुए कीट के उपर बरफ जमने से बरफ में ही समाधि हो जाता है। वैसे लगभग छ ; महीने तक रहता है। बाद में वातावरण में बदलाव से बरफ पिघलते ही बाहर दिखलाई पड़ता है। बाहर दिखलाई पड़ते ही दोबारा जीवित होकर उड़ कर, दोबारा अपना जीवन जीने लगता है। यह हर वर्ष प्रत्यक्ष रुप से होनेवाला कार्य है।इसे (N.G) T.V

चैनल में दिखलाया गया था। ईसा मसीह तीसरे दिन जागे थे, अविश्वास करने वाले भी, इस कीट का मरना तथा दोबारा छ ; महीनों के बाद जीवित होने पर लोगों को जरुर यकीन करना होगा। तात्कालिक मरण अनेकों प्राणियों को होने के बावजूद भी लोग समझ नहीं पा रहें हैं।लेकिन दुनिया इसे सहज मरण ही मानती हैं। तात्कालिक मरण होना लोगों को समझाने के लिए इस कीट का जन्म हुआ ,जिसमें छ ; महीनें जीवन जीना, तथा छ ; महीनें मरना है। उम्मीद है इस कीट को देखने के बाद हर मनुष्य जरुर विश्वास करेगा । तात्कालिक मरण कितने दिन का हो सकता है कहने के लिए कोई सटीक जवाब नहीं है। क्योंकि तात्कालिक मरण उनके अपने कर्मानुसार निर्णीत रहता है। ईसा मसीह का तीन दिनों का था। दूसरों के लिए उनके कर्म के अनूसार 30 दिनों का या 3 घन्टों का भी हो सकता है।

*****

तात्कालिक मरण को पूर्वकाल में किसी ने पहचाना

तात्कालिक मरण जब से सृष्टि बनी तब से ही है। कई आध्यात्मिक गुरुओं ने इसे पहचाना भी। 100 वर्ष पूर्व तमिलनाडू राज्य में कुंभकोण नामक स्थान में मास्टर C.V.V रामन नामक आध्यात्मिक गुरु रहते थे। उस प्रान्त में उस जमाने में वे एक महान गुरु माने जाते थे। उनके शिष्यों में कोत्ता रामकोटय्या, तथा संगमेश्वर राव नाम के दोनों शिष्यों ने “ भृक्त रहित तारक राजयोग” नामक ग्रंथ में 13 वॉ पन्नें में, 1911 वॉ वर्ष में हुई एक घटना के बारे में उल्लेख किया था। एक दिन C.V.V रामन जी अपने किसी जरुरी काम से सफर करते समय में, उनकी दत्तक माता कंचुपट्टी सुब्बम्मा जी, कावेरी नदी से स्नान कर लौट रही थी, रास्ते में नीचे गिर कर उनकी मौत हो गई। उनकी मृत्यु का समाचार जानकर C.V.V. रामन जी ने उनके वापस लौटने तक उनके शरीर को चींटियों से सावधानी बरतने तथा घर के अन्दर में सुरक्षित रखने को कहा। सुब्बम्मा जी के शरीर को घर के अन्दर ही सुरक्षित रखा गया। 16 दिनों के बाद C.V.V . वेंकट रामन जी वापस लौट कर उन्हें जीवित किया। उस समय उनकी आयु 80 वर्ष थी, दोबारा जीवित होने के बाद 3 वर्ष तक जीवित रही। 80 वर्ष की माता को जीवित किया, परन्तु 30 वर्ष के जमाई को पुन; जीवित न कर

thraithashakam-36

सके। इससे सिद्ध होता है कि उनकी माता का पूरा मरण नहीं हुआ अर्थात् तात्कालिक मरण था, जानकर C.V.V. रामन जी अपने माता को जीवित किया। इससे पता चलता है कि रामन जी को उस समय में काल मरण, तथा तात्कालिक मरण के बारें में जानकारी थी।

ऊपर कहा गया विषय 100 वर्ष पूर्व का था, 5200 वर्ष पूर्व श्री कृष्ण जी के समक्ष में हुई विषय की चर्चा करेंगें। श्री कृष्ण के बाल्य में प्रपंचविद्या को सिखलाने वाले गुरु सान्दीपनि थे। सान्दीपनि के पुत्र की छोटी उम्र में मृत्यु हो जाने से सान्दीपनि बहुत रोए। गुरु सान्दीपनि जी को सांत्वना देने के लिए गए। श्रीकृष्ण ने गुरु जी की पीड़ा को न देख पाए, और मरे हुए बालक को दोबारा जीवित किया, इतिहास गवाह है।100 वर्ष पूर्व मास्टर सी.वी.वी.जी ने अपनी दत्तक माता को जीवित करना, 5200 वर्ष पूर्व श्रीकृष्ण ने अपने गुरु सान्दीपनि के पुत्र को जीवित करना, ये दोनों मरण , अकाल मरण नहीं थें, बल्कि तात्कालिक मरण थें, पता चलता है। काल मरण को प्राप्त मनुष्य वापस जीवित होने की कोई गुंजाइश ही नहीं रहती है। पहले भी इसकी चर्चा कर चुके हैं। मृत व्यक्ति दोबारा अपने आप जीवित होना, या किसी के द्वारा जीवित करना, ये दोनों तात्कालिक मरण के अंर्तगत ही आते हैं। तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्ति को यदि किसी ने जीवित किया है, तो उन्हें पहले से जानकारी रही होगी कि उस मृत व्यक्ति ने तात्कालिक मरण को प्राप्त किया है। उन्हें कैसे ज्ञात हुआ मृत व्यक्ति का मरण, तात्कालिक मरण था, इस बारें में विस्तार से कहने के लिए मुझे भी ज्ञात नहीं है।और साबित करने के लिए भी मेरे पास कोई जवाब भी नहीं है। हमें यह नहीं जानना कि उन्हें जानकारी कैसे हुई, हमें इतना ही समझना है कि उन्हें तात्कालिक मरण के बारें में जानकारी थी।

पूर्व तात्कालिक मरण के बारें में जानकारी रखने वाले कई महान आध्यात्मिक गुरु हुआ करते थें। इतने महान लोगों ने तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्ति को पहचान कर जब जीवित किया, तो उसे हमलोग बहुत बड़ी महिमा मानने लगे, परन्तु हमलोगों ने इस मरण के बारें में जानने की कोई भी कोशिश नहीं की। और अभी भी हमलोग तात्कालिक मरण के बारें में समझ नहीं पा रहें हैं, इसे साबित करने के लिए एक विषय में विवरण कर रहे हैं देखिए। यहाँ पर बायबिल के विषय को उदाहरण के लिए लिया जा रहा है। इस विषय में कहने से पहले आप से अनुरोध कर रहा हूँ कि मैं पूरी तरह से इन्दू हूँ। मेरा कहा हुआ इन्दू के धर्म

thraithashakam-36

है।इन्दू धर्मों के समर्थन में कहीं भी उदाहरण हो उन्हें बताना मेरा कर्तव्य है। इससे पहले भी इन्दूधर्मों की महानता को गलत समझने वाले ईसाईयों की हम आलोचना करते हुए, बायबिल में मसीहा के कहें वाक्य जो आप लोगों को अबतक समझ में नहीं आया, उन वाक्यों को हमने सूस्पष्ट किया। इतना ही नहीं मसीहा के बोधों का विरुद्ध वाक्य भी बायबिल में दिए गए हैं धैर्य से हमने कहा है। " **सृष्टिकर्ता कोड** 963" नामक एक छोटे से ग्रंथ में बायबिल में आदिकांड को झूठों से भरी कह कर हमने लिखा । हमारे उद्देश्य को समझने न पाने की वजह से कई हिन्दूओं ने, हमें दूसरे मत का बोधक कहा। जो नाममात्र भी हिन्दू धर्म(सूत्र) को न जानते हो, हिन्दू धर्म संस्था के नाम से हिन्दू मत का सर्वनाश करते हैं, और हमारे जैसों को ईसाई मत से संबंधित कहा जाना, हिन्दू अपनी ही उँगली से अपनी आँख को फोड़ने जैसा हुआ की नहीं, पुछ रहा हुँ। यदि हम कभी भी उदाहरण के लिए बायबिल के विषयों को कहे तो हमें ईसाई कहना, तथा ईसाई मत का प्रचारक कहते हैं ? सारे हिन्दूओं का मुख्य कहलाने वाला विवेकानंद ने अपने जीवन चरित्र पुस्तक में 17 वॉ पन्नें में " **ईसा मसीह के समय में यदि मैं होता तो**, **उस दिन उनके चरणों को मेरे आँसूओं से ही नही बल्कि**, **मेरे हृदय के रक्त से धोता** " कहा, ऐसा कहने भर से विवेकानंद जी भी ईसाई मत का प्रचारक हुए क्या ? मैने ईसाईओं से कई प्रश्न पुछे, अनेकों संदर्भों में उनकी अज्ञानता को दर्शाया भी। मेरे लिखे ग्रंथों को बिना पढ़े, मैं क्या कहना चाह रहा हूँ,न समझ कर, बिना सोचे-समझें बातें करना अच्छी बात नहीं है, हिन्दू संस्था का नाम रखने वालों से कह रहा हुँ। हिन्दू धर्मों को समझाने वाले, हिन्दू धर्म क्या होता है, न समझने वाले अनावश्यक आलोचना करना अच्छी बात नहीं है।

सनातन हिन्दू धर्म सारे आध्यात्मिक पर आधारित होते हैं।आध्यात्मिक एक हिन्दू (इन्दू)

धर्म को छोड़ कर कहीं भी नहीं है। ऐसे आध्यात्मिक रहस्य तात्कालिक मरण के बारें में हिन्दू आध्यात्मिक गुरु मास्टर C.V.V. जी उदाहरण है, तथा ब्रम्हविद्या शास्त्र को सूचित करने वाले श्रीकृष्ण को भी उदाहरण के लिए लिया गया है, वैसे ही 9 वॉ अध्याय 23,24,25 वाक्यों में " इतने में ईसा ने उस अधिकारी के घर जाकर बाँसूरी बजाने वाले को, तथा शोर मचा रहे भीड़ को देख कर " **हट जाओ यह बच्ची मरी नहीं है सो रही है** " इस पर वे उनकी हँसी उड़ाते रहे। भीड़ बाहर कर दी गई, तब ईसा ने भीतर जाकर लड़की का हाथ पकड़ा और वह उठ गई। "

तात्कालिक मरण को प्राप्त व्यक्ति निद्रावस्था में रहता है इसकी हमने पहले भी चर्चा की, ईसा ने कहा था वह सो रही है मरी नहीं है। वहाँ सारी प्रजा ने युवती मर गई कहा, परन्तु उस युवती को देख कर, वह मरी नहीं सो रही है कहा, इससे सिद्ध होता है कि उस युवती ने तात्कालिक मरण को प्राप्त किया था। ईसा ने भी वह मरी नहीं स्पष्टरुप में कहा था। इसके बावजुद तात्कालिक मरण होना ईसाई लोग अब तक ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं। वह मरी नहीं, कहने के बावजुद भी ईसा के बातों का नजरअंदाज करते हुए, ईसा ने मरे हुए को जीवित किया कहना क्या गलत नहीं है? ईसा ने मरी नही है कहने के बावजुद भी मरे हुए को जगाया कहना, ईसाईयो ने ईसा के कहें वाक्य पर ध्यान नहीं दिया सिद्ध होता है। ईसा जब जीवित थे उनके वाक्य यह बहुत बड़ी रहस्यमयी है ग्रहण न करने वाले, ईसा जब स्वयं तात्कालिक मरण को प्राप्त हुए, ईसा मर गए कहना क्या गलत नहीं था? ईसा का शुक्रवार दोपहर तीन बजे तात्कालिक मरण हुआ था, शनिवार पूरी नींद में विश्राम कर, रविवार सुबह 6.00 उठे, उन्होंनें मरण पर विजय पाया कुछ लोगों ने कहा, वास्तविकता को छुपाकर ईसा को भी गलत साबित करना हुआ न ?ऐसा पुछ रहा हूँ।

प्राचीन काल में इन्दू (हिन्दू) धर्म की आध्यात्मिकता को जानने वाले, सारे मरण साधारण मरण नहीं होते हैं, उनमें काल मरण, अकाल मरण, तथा तात्कालिक मरण यें तीन मरण होते हैं, उन्हें ज्ञात था। वैसे उन्हें जानकारी ही नहीं बल्कि तीसरा मरण को प्राप्त व्यक्ति की पहचान भी करते थें तथा उनकी अपनी जानकारी की पद्धति के अनुसार जीवित भी करते थें।ऐसे लोगों में सबसे पहले 5200 वर्ष पहले ही, मरा समझ कर सान्दीपनि के पुत्र को, श्रीकृष्ण ने दोबारा निद्रा से जगाने जैसे जगाकर दिखाया। इससे हमें द्वापरयुग में तात्कालिक मरण प्राप्त लोग भी थें, जिन्हें उस काल में ही श्रीकृष्ण ने उस तीसरे मरण को प्राप्त उनके गुरुपुत्र को जीवित कर दिखाया सिद्ध होता है। मानवों को आध्यात्मिकविद्या को शास्त्रबद्ध तरीकें से सूचित कराने वाले श्रीकृष्ण ही थें। इसलिए उन्होंने पहले आध्यात्मिक रहस्य यानि तीसरे मरण के बारें में दुनिया की समझ में आ सकें, समझाया। परन्तु भगवान श्रीकृष्ण ने इतने बड़े मरण के विषय में समझाने पर भी, इसे किसी ने भी नहीं समझा। यह एक आध्यात्मिक रहस्य है किसी ने भी न समझा, उल्टा इसे महिमा करार दिया। यदि किसी ने भी तात्कालिक मरण को जाना तो, वें महान है, इसलिए वें जान पाए कहा जाने लगा। हमें इस विषय में आध्यात्मिक धर्मों को, तथा शरीर के अन्दर आत्मा का ही कार्य है, समझाना था परन्तु किसी ने योचना नहीं किया। तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्ति के बारें में वे मरे नहीं, सो रहे है, दो हजार वर्ष

पूर्व ईसा मसीह ने कहा, सबने मरा हुआ समझा, ईसा की आवाज सुनकर उठने वाले,तथा हाथ पकड़ कर हिलाने से जागने वाले लोग भी हैं। हलांकि इस घटना का अर्थात् जीवित करना तथा मरे हुए को जगाने का कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया। उन्होंनें जगाने से पहले ही सो रहा है कहकर जगाया। बायबिल में दो जगहों पर सबने मरा हुआ समझा दोबारा जीवित करते समय, वह सो रही है कह कर जगाया गया। ईसा के बार-बार कहने पर भी किसी ईसाई ने भी उस पर ध्यान नहीं दिया। ईसा ने मरे हुए को जगाया कहना, ईसा की बातों को असत्य साबित कर रहें हैं। इतना ही नहीं ईसा ने स्वयं तात्कालिक मरण को पाकर, पूरे एक दिन विश्राम लेकर, तीसरे दिन जागे थे,ईसा मरण से जागे है कह कर ईसाईयों ने प्रचार किया। परन्तु इस बात को ईसा ने नहीं माना। इसलिए ईसायों को समझ में नहीं आया कहा गया। मेरा कहना ही नहीं बल्कि स्वयं ईसा मसीह ने भी मेरे वाक्यों को आदरणकर्ता आकर सूचित करेंगें तब तक समझ में नहीं आएगा कह कर चले गए। ईसा ईसाईयों के प्रवक्ता थे फिर भी उनका काल मरण कब हुआ, कहाँ पर हुआ किसी को मालूम नहीं हैं।उनके जीवन का एक बार तात्कालिक मरण होना ही हमलोगों को मालूम हैं।ईसा के बारें में जितनी जानकारी हमें है उतनी भी जानकारी ईसाईयों को नहीं हैं मैं कह रहा हूँ।

*****

श्रीकृष्ण को प्राप्त मरण कौन सा था?

इन्दूओं को (हिन्दूओं) धर्मो (सूत्र) के बारे में सूचित करने वाले मुख्य प्रवक्ता श्रीकृष्ण थे।कृष्ण जी मानव धर्मों को बोध कराने वाले भगवान थे। उन्होंनें अपने जीवन में एक बार तात्कालिक मरण प्राप्त किया था। तात्कालिक मरण किस प्रकार से होता है समझाने निमित्त उस मरण को उन्होंने प्राप्त किया। तात्कालिक मरण कृष्ण जी को प्राप्त करने की आवश्यकता न होने के बावजुद भी, उन्होंने उसे भोगा प्रतीत होने के लिए छोटी सी उमर में ही उस मरण को प्राप्त किया। इस विधान से मृत्यु प्राप्त करने की वजह, वे उस मृत्यु से अनजान थे, किसी के लिए भी कहने की कोई गुंजाइश ही नहीं है। क्योंकि जहाँ तक मुझे मालूम है इतिहास में 5200 वर्ष पूर्व कृष्ण जी ने तात्कालिक मरण को प्राप्त किया। वैसे ही इस मरण से सान्धीपनि पुत्र को

thraithashakam.36

जगाया। कृष्ण जी 120 वर्ष जी कर अंत में काल मरण प्राप्त किया। इससे पहले छोटी उमर में, नंदीगाँव में कलिंग झील के पास सर्प डँसने के शिकार बने। सर्प के विषैलेदंत रक्त की नली में गढ़ने के कारण, दो ही मिनट में विष मस्तिष्क में पहुँचने की वजह से कृष्ण जी की तात्कालिक मरण हो गयी। उनका मरण सिर्फ दस मिनटों का था। तात्कालिक मरण को प्राप्त करने वाले कृष्ण जी दस मिनट तक उसमे रह कर वापस जागे थे। उस मरण में रहकर दस मिनटों तक कृष्ण जी निद्रावस्था में थे।

श्रीकृष्ण को सर्प ने डँसा? उनका तात्कालिक मरण हुआ? आश्चर्य की बात है।ऐसा किसी भी महाभारत में, या भागवत् में इसका उल्लेख कहीं भी नहीं किया गया। आप प्रश्न कर सकते हैं। शायद लिखने वाले व्यक्ति की मतिभ्रष्ट हो गई इसलिए अपनी मन-मर्जी से लिख रहा है कह कर मुझे दोष दे सकते हैं। बिना किसी आधार के कैसे लिख सकते हैं कहकर सवाल कर सकते हैं। लोग कुछ भी कहें यह सत्य है, सूचित करते हुए लिख रहा हूँ। सभी के प्रश्नों का मेरे पास एक ही उत्तर है उस दिन मैंने देखा था, इसलिए कह रहा हूँ। मैंने उस दिन हुई घटना को नहीं देखा साबित करने के लिए आपके पास कोई आधार है? यदि मैं पुछुं तो आप कोई आधार दिखा नहीं पायेंगें।

आपको और आश्चर्यचकित करने वाला विषय बतला रहा हुं। आप यकीन करें या न करें कहने वाला विषय सौ प्रतिशत सत्य है।मुझे किसी को भी यकीन दिलाने की आवश्यकता नहीं है। कोई यकीन करें या न करें मुझे न कोई लाभ है न हानि है। मेरी जानकारी का विषय आपलोगों तक पहुँचाना मेरा कर्तव्य है। इस वजह से बतला रहा हूँ। बचपन में कलिंग झील के पास सर्प डँसने से कृष्ण जी का लगभग दस मिनट तक तीसरा मरण अर्थात् तात्कालिक मरण हुआ था कहा गया, इतना ही नहीं बल्कि, उस दिन डँसने वाला साँप एक सिर वाला था, फोटो में दिखलाने जैसा सर्प दस सिरों वाला नहीं था कह रहा हूँ। इतना ही नहीं सर्प ने कृष्ण जी के बायाँ पैरे के पिंडली में मांसपेशी मे डँसा था। साधारणतया नाग साँप एक फुट या डेढ़ फुट से अधिक सिर ऊँचा उठा नहीं सकता है। उस दिन कृष्ण जी को डँसने वाला नागसाँप एक फुट ऊँचा सिर को उठाकर बाँये पैर के पीछे भाग के पिंडली के ऊपर माँसपेशियों पर डँसा था। सर्पदंत पैर की पिंडली की माँस पेशियों में रक्त नलियों के अन्दर तक गड़ जाने की वजह से, साँप का विष दो मिनट में पूरे शरीर में फैलकर मस्तिष्क में पहुँच गया। उसी समय में कृष्ण जी तात्कालिक मरण को प्राप्त हुए। पानी से भरे झील

के पास अर्थात् झील के बाहर ही साँप ने डँस लिया। वहाँ खड़े बच्चों ने भी उस दृश्य को देखा था। डँसने के तुरन्त बाद भय से साँप पानी में चला गया। नागसाँप पानी में ज्यादा देर तक नहीं रह सकता है। इस वजह से पन्द्राह मिनट के बाद पानी से बाहर आ गया। इतने में कृष्ण जी वापस जाग गए। उन्हें उस सर्प पर बहुत क्रोध आया। साँप बाहर आते ही तुरन्त कृष्ण तथा वहाँ खड़े लोगों ने मिलकर उस साँप को मार डाला। इसके अलावा कालिंग झील में न नागराज था, न ही नागराज की दो पत्नीयाँ थी, न ही नागराज दस सिरोंवाला था, यह पूर्ण असत्य है हमनें जो कहा वह पूर्ण सत्य है।

सर्प डँसने से कृष्ण जी की क्या मृत्यु हुई थी? क्या दोबारा जीवित भी हुए थे? क्या मृत व्यक्ति दोबारा जीवित हो सकता है? क्या इन सब विषयों पर यकीन किया जा सकता है? ऐसे अनेक संदेह हो सकते हैं। इसका जवाब है। नागसाँप के डँसने से किसी की भी मृत्यु, काल मरण नहीं होती है। वैसे मरण को अकाल मरण भी नहीं कह सकते हैं। क्योंकि नागसाँप डँसने से उस व्यक्ति की साँसे रुक कर मर जाने पर भी वह पूर्ण मरण प्राप्त नहीं करता है। क्योंकि श्वास भीतर ही ठहर जाती है। श्वास बाहर निकल जाना पूर्ण मरण हमारे मरण सिद्धान्त में कहा गया है। 1980 वर्ष में हमारी रचना " **जनन–मरण का सिद्धान्त** " नामक ग्रंथ में काल मरण के बारें में विस्तृत जानकारी दी गयी है। अकाल मरण के बारें में " **भूत–प्रेतों की सत्य घटनाएँ** " नामक ग्रंथ में कहा गया है। तात्कालिक मरण के बारें में " **मरण का रहस्य** " नामक ग्रंथ में कहा जा रहा है।नागसाँप के डँसने से मृत व्यक्ति सिर्फ बाह्य रुप से ही मृत रहता है, भीतर से जीवित रहता है।ऐसा व्यक्ति कई घन्टें, या कई दिनों तक निद्रावस्था में रहता है। तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्ति को कोई भी व्यक्ति जो साँप के विष के बारें में जानकारी रखता हो, उनके शरीर की चिकित्सा करके, विष को निकाल कर उसे दोबारा जीवित कर सकता है। इससे सिद्ध होता है कि नागसाँप डँसने से मृत व्यक्ति पूर्ण मरता नहीं है।

द्वापरयुग में कृष्ण जी को नागसाँप ने ही डँसा था, इस वजह से कृष्ण जी ने तात्कालिक मरण को प्राप्त किया, वापस अपने आप ही जागे थे। बचपन में सर्पदंश के निशान उनके बाँये पैर के ऊपर निशान के रुप में रह गए। कृष्ण जी के विषय में अब तक किसी को भी इस रहस्य की जानकारी नहीं होगी कह सकते हैं। आपकी बातों पर हम कैसे यकीन करे ऐसा कोई कहे तो, सर्प डँसने के निशान से संबंधित एक और

रहस्य सूचित कर रहे हैं। श्रीकृष्ण जी भगवान थे, उनका परमात्मा अंश से जन्म हुआ था " **श्रीकृष्ण परमात्मा है या भगवान** " नामक ग्रंथ की रचना हमनें की। उस ग्रंथ में कृष्ण का जन्म दो बार और होगा, वे कुल तीन बार इस धरती पर आयेंगें कहा गया। इतना ही नहीं वे दो बार आकर चले गए कहा गया। अब तीसरी बार भी आनेवाले है कहा गया। कृष्ण जी जब दूसरी बार आये थे, उनका पहला जन्म अर्थात् कृष्णावतार में बाँया पैर पर सर्प डँसने के निशान, दूसरी बार धारण किए शरीर में होना विशेष था। दूसरी बार धारण किए शरीर में वही बाँया पैर, उसी जगह पर साँप के डँसने के निशान होना बड़ी विशेष बात थी। वैसे ही निशान उसी जगह पर क्यों थे ? हमारा मानना हैं कृष्ण ने मनुष्य के रुप में जन्म लिया, साँप डँसने के निशान पहचानने के लिए, तथा आधार के लिए हो सकते हैं। पहला जन्म तथा दूसरे जन्म के बीच की अवधि तीन हजार वर्ष होने के बावजुद, दूसरे जन्म में भी शरीर के ऊ-पर साँप डँसने के निशान होना बहुत बड़ी विशेषता होने के बावजुद, उन निशानों के विषय में कृष्ण जी के जन्म में, या उसके बाद के जन्म में किसी को भी मालूम न हो पाया।

दूसरे जन्म में एक भक्त जो उनका पैर दबा रही थी पास-पास में सूई के नोक जितने दो निशानों को देखा और उनके बारें में पुछा। उन्होंनें ये मेरे पिछले जन्म के निशान हैं, मेरा मरण मेरे पिछले जन्म के प्रान्त में जाकर ही होगा, मैं कहाँ जाऊँगा आप लोगों को इस की खबर नहीं रहेगी, कुछ समय तक ही आपलोगों के पास रहूँगा कहा। उनके बातों का उद्देश्य उनकी समझ में न आया, उसके बाद में वे कई बार उन निशानों को देखी। परन्तु उन निशानों के बारें में कभी नहीं पुछी। कृष्ण जी का भारतवर्ष के गुजरात राज्य में मरण हुआ था। दोबारा यदि कृष्ण जी का तीसरा जन्म हुआ तो, तीसरे जन्म में उनके धारण किए शरीर के ऊपर सर्प डँसने के निशान जरुर होगा ऐसा हमारा मानना हैं। तीसरे जन्म के शरीर में सर्प डँसने के निशान कहाँ होंगें, हमें अनुमान नहीं है, इसलिए सूचित नहीं कर रहें हैं। **कृष्ण का दूसरा जन्म कौन सा था यदि कोई प्रश्न करें तो दूसरे जन्म के बारें में " कृष्ण जी परमात्मा है या भगवान " नामक ग्रंथ में कृष्ण का मरण दुनिया के लिए सीख है अध्याय में सम्पूर्ण रुप से दिया गया है**। दूसरे जन्म में भी कृष्ण जी तात्कालिक मरण को प्राप्त हुए थे, तीन दिनों के बाद अपने आप उठकर, लगभग 40 दिनों तक उस प्रान्त में रहकर, वहाँ से इन्दू देश आये। यहीं पर उनकी मृत्यु हुई।

इस धरती पर जन्मा कोई भी मनुष्य हो, या कोई भी प्राणी हो काल मरण उनके लिए अनिवार्य है। यदि अकाल मरण हो, या तात्कालिक मरण हो, प्राप्त कर भी सकता है या नहीं भी। यह उस प्राणी के कर्मानुसार निर्णीत मरण है। द्वापरयुग में कृष्ण जी अपने कर्मानुसार तात्कालिक मरण प्राप्त किए थे। अब तीसरा जन्म कैसा होगा! वह उनके कर्म से संबंधित विषय है, इसलिए भविष्य के विषय के बारें में कहा नहीं जा सकता है। हम लोग तीसरे प्रकार का मरण अर्थात् तात्कालिक मरण के बारे में जानें, आधार (सबूत) के लिए कृष्ण जी ने उस मरण को प्राप्त कर दिखलाया। इतना ही नहीं तात्कालिक मरण को प्राप्त करने वाला अपने आप वापस कैसे जाग सकता है निरुपित कर दिखलाया।

*****

तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्ति को चिकित्सा की आवश्यकता होती है ?

साँप डँसने से मृत व्यक्ति को चिकित्सा करवा कर बचाया जा सकता है। कृष्ण जी साँप डँसने से मर अपने आप जाग गए। यहाँ दो पद्धतियाँ हैं। इनमें से कौन सी पद्धति सही होगी? साँप के विष की वजह से मृत साधारण मनुष्य को बिना चिकित्सा के क्या जीवित किया जा सकता है? ऐसा कई लोग पुछ सकते हैं। हमारी जानकारी का समाधान कुछ इस प्रकार से है! मनुष्य के लिए जाग्रत, निद्रा तथा स्वप्न ये तीन अवस्थाएँ होती हैं। इन तीन अवस्थाएँ को हर व्यक्ति जानता है। मनुष्य सोते ही निद्रा में चले जाना, निद्रा में जाने वाला कभी भी स्वप्नलोक में जाना, यह लोगों की जानकारी का ही विषय हैं। किन्तु,मनुष्य जाग्रतावस्था से निद्रावस्था में कैसे जाता है? निद्रा से स्वप्नावस्था में कैसे जाता है? यह विषय लोगों के लिए रहस्यमयी हैं। मनुष्य के लिए जैसे निद्रावस्था तथा जाग्रतावस्था होती है वैसे ही मरण तथा तात्कालिक मरण होती हैं।जैसे तात्कालिक मरण को प्राप्त करने वाला बाद में मरण को प्राप्त करता है। वैसे ही मरण को प्राप्त करने वाला दूसरा जन्म लेकर जाग्रतावस्था को पाता है। इससे सिद्ध होता है कि जीवात्मा हमेशा निद्रा, जाग्रतावस्था तथा स्वप्नावस्था से होकर गुजरता है।उसी प्रकार से एक जीवात्मा जीवन, मरण तथा तात्कालिक मरण को प्राप्त करना है सिद्ध होता है। अनेक लोगों को सोते ही पहले नींद आना, बाद में स्वप्न आता है। कभी-कभी जीवात्मा पहले स्वप्न में चले जाता है। पहले स्वप्न में जाने वाला वापस जाग्रतावस्था में

आता है। कभी-कभी स्वप्न से सीधा निद्रा में जा सकता है। इससे हम यह नहीं कह सकते कि जाग्रतावस्था में रहने वाला सीधा नींद में जाएगा, तथा स्वप्नलोक में जाने वाला सीधा जाग्रतावस्था में आएगा। वैसे मनुष्य (जीव) जीवन से मरण की ओर जाता है। परन्तु कभी न कभी तात्कालिक मरण को भी प्राप्त करता है। तात्कालिक मरण में जाने वाला वापस जीवन में आ भी सकता है या मरण भी हो सकता है। इसलिए जीवन, मरण तथा तात्कालिक मरण की समानता जाग्रत, निद्रा, तथा स्वप्न से किया जाता है कह सकते हैं।

मनुष्य जाग्रतावस्था में रहते समय शरीर की पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ कार्य करती रहती है। आँखें देखती है, कानें सुनती हैं।इसलिए शरीर के अन्दर में वास जीवात्मा को बाहरी समाचार मिलता रहता है। यदि कोई भी उसका नाम लेकर पुकारे तो वह तुरन्त उसकी ओर देख कर उनसे बातें करता है। पुकार के तुरन्त उस पुकार को महसूस करना, अर्थात् जीवात्मा जाग्रतावस्था में था इसलिए जीवात्मा को ज्ञात हुआ। जाग्रतावस्था में कानों द्वारा आवाज सुनाई पडी।निद्रावस्था में मनुष्य को पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ द्वारा कोई भी समाचार नहीं मिलता है क्योंकि इन्द्रियों द्वारा समाचार पहुँचाने वाला मन पूरे शरीर में नहीं था। इसलिए कानों द्वारा कोई भी समाचार निद्रा में रहने वाला जीवात्मा तक नहीं पहुँचा। यदि कोई व्यक्ति नींद में रहता है और उसे कोई पुकारता है तो वह नींद से जाग जाता है। यदि सो रहा व्यक्ति को पुकारा जाए तो वह पुकार सो रहा व्यक्ति को कैसे सुनाई पड़ा? मुझे ही बुला रहा है उसे कैसे मालूम पड़ा? वह कैसे जाग पाया? इन प्रश्नों के उत्तर यदि जान सकें तो मनुष्य निद्रा, जाग्रत, तथा स्वप्न के रहस्यों को आसानी से जान जायेगा।यदि निद्रा, जाग्रतावस्था, तथा स्वप्न का पूरा विवरण जाना जाय तो जीवन, मरण, तथा तात्कालिक मरण के बारें में आसानी से जानकारी हो सकती है। इसलिए निद्रा, जाग्रतावस्था, तथा स्वप्न के बारें में जानकारी पहले करेंगें। जाग्रतावस्था जीवन जैसी, निद्रा मरण जैसी, तथा तात्कालिक मरण स्वप्न की तरह होती है। मनुष्य बाह्य रुप से कितना भी बड़ा ओहदा में रहे, शरीर के अन्दर उनकी स्थिति क्या होती है? वह कौन है? वह स्वयं अनजान स्थिति में है। जाग्रतावस्था में जीवन जी रहा मनुष्य के शरीर में जीवात्मा के साथ 25 भाग हैं। उन 25 भागों को आत्मा शक्ति दे कर संचालन करती है। **सब में ही हूँ सर्वोत्तम, मान कर घमंड में चूर रहने वाला जीवात्मा शरीर में एक न्यूनतम मात्र ही है।** स्वयं को सर्वोत्तम मानने वाला जीवात्मा, शरीर के सभी भागों में से न्यूनतम होने से अनजान जीवात्मा, अपने आप को सर्वोत्तम हूँ के भ्रम में है। शरीर में जीवात्मा केवल सुख-दुख को अनुभव मात्र ही करता है। किन्तु मन, शरीर में जीवात्मा से भी महान दो प्रकार के कार्यों

को करती है। वैसे ही बुद्धि भी दो प्रकार के कार्यों को करता है। दो-दो कार्य करने वाले मन तथा बुद्धि से एक ही कार्य करने वाला जीवात्मा को न्यूनतम ही कहा जाएगा।

निद्रावास्था में शरीर के अन्दर में जीवात्मा बाह्य विषयों से अज्ञात रहता है। इसलिए उस समय में जीवात्मा अंधा है कह सकते है। जागतावस्था में पूरे शरीर में व्याप्त मन, निद्रा में पूरे शरीर को छोड़कर सिर के अन्दर ब्रन्हनाडी़ में ठहर जाती है। बाहरी विषयों को सूचित करने वाला मन पूरे शरीर में न होने की वजह से, शरीर के बाह्य ज्ञानेन्द्रियाँ के विषय जीवात्मा को ज्ञात नहीं होता है। इस वजह से निद्रा में व्यक्ति को पुकारने से उसकी आवाज जीवात्मा तक नहीं पहुँच पाती है। उनको पुकारना जीवात्मा को मालूम नहीं पड़ता है। फिर भी बाहरी व्यक्ति पुकारने पर नींद में व्यक्ति कोई उसे पुकार रहा है, महसूस कर जाग्रतावस्था में आता है। यदि जीवात्मा को बाह्य ज्ञानेन्द्रियों का समाचार को पहुँचाने का कार्य मध्यवर्ती यानि मन ही न हो तो, बाहरी पुकार को अन्दर में जीवात्मा को कैसे मालूम पडा़ ? इस प्रश्न का उत्तर है बाहर पुकारने पर मन द्वारा जीवात्मा को नहीं पहुँचा कह सकते है। क्योंकि उस समय में पूरे शरीर में व्याप्त आत्मा स्वयं किसी की पुकार को भीतर मन को अहसास करवाती है। आत्मा ही ब्रम्हनाडी़ में दबे हुए मन को अहसास करवाने की वजह से मन मौन को छोड़कर जाग्रतावस्था में आकर क्षण में ही पूरे शरीर में व्याप्त हो जाती है। इस प्रकार से मन पूरे शरीर में व्याप्त हो जाने की वजह से बाहरी इन्द्रियों के पूरे विषय उसी क्षण से जीवात्मा को ज्ञात होने लगता है। पहले निद्रा में रहा जीवात्मा को स्मरण में लाने के लिए आत्मा ही कारण हुई, आत्मा ने ही मन को जाग्रत किया, इसलिए निद्रा से मनुष्य जाग पाया, सिद्ध होता है। मनुष्य निद्रा में जाना, उस निद्रावस्था में मनुष्य बाहरी विषयों से अनजान हो जाना सभी जानते ही हैं। निद्रावस्था में बाहरी समाचार से अनजान, मनुष्य उन्हें पुकारना, उन्हें पुकार कैसे सुनाई पडा़ ? **कई विशेष विषयों में आत्मा ही अन्दर में मन को अहसास करवाती है सिद्ध होता है।**

निद्रा से मरण कि समानता की गई। तात्कालिक मरण की समानता स्वप्न से की गई निद्रा हो, या स्वप्न हो, मनुष्य बाहर से असंबंध हो जाता है। इस वजह से स्वप्नावस्था के व्यक्ति को भी निद्रावस्था के व्यक्ति जैसे ही हमनें बतलाया है। शरीर के अन्दर जीवात्मा स्वप्नावस्था में होने के बावजुद, वह स्वप्नावस्था में है किसी को ज्ञात नहीं होता है। इसे सब निद्रा ही समझते हैं। इसी तरह से मृत व्यक्ति हो, या

तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्ति हो, दुनिया उसे मृत व्यक्ति ही समझेगी।जिस प्रकार से स्वप्नावस्था में व्यक्ति बाहर से निद्रावस्था का व्यक्ति जैसे दिखलाई पड़ता है, वैसे ही, तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्ति भी बाहर से मरा हुआ दिखलाई पड़ता है। निद्रा, तथा स्वप्न दोनों बाहर से एक जैसा होने के बावजुद भी कुछ अनुभवी लोग निद्रा तथा स्वप्न की अलग-अलग पहचान बतलाते हैं। निद्रा तथा स्वप्न एक जैसा होने के बावजुद भी दोनों में स्वल्प अन्तर होता है, जैसे कि गाढ़ी नींद में मनुष्य का श्वास ऊँची आवाज करते हुए चलता है, वही स्वप्नावस्था में श्वास बिना आवाज के चलता है बताते हैं।उसी प्रकार से कई लोग आत्मा का अध्ययन करने वाले मरण, तथा तात्कालिक मरण में स्वल्प अंतर की पहचान की । पहचान करने वालों में श्रीकृष्ण तथा ईसा थे, जिन्होंनें तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्तियों को जगाया था। तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्ति को सब ने मरा हुआ समझा, उसका विवरण जानने वाले ने वह मरा नहीं,सो रहा सूचित किया। तात्कालिक मरण को क्या आप पहचान सकेंगें ? ऐसा कोई मुझ से पुछे तो, स्वप्नावस्था के लोग की पहचान हो सकती है, परन्तु तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्ति की पहचान मैं नहीं कर सकता कह रहा हूँ।

पूर्वकाल में कृष्ण तथा ईसा ने कैसे पहचाना? कैसे जगा पाए? इन प्रश्नों का मेरे पास कोई भी जवाब नहीं है कह रहा हूँ। क्योंकि कृष्ण तथा ईसा जितना महान मैं नहीं हूँ न ! हालांकिं तीसरे प्रकार का मरण से जीवित हुआ व्यक्ति के शरीर में क्या हुआ था मैं बता सकता हूँ। तीसरे प्रकार का मरण अर्थात् तात्कालिक मरण को प्राप्त कुछ लोगों को मात्र ही चिकित्सा की आवश्यकता होती हैं। उदाहरण के लिए नागसाँप के डँसने से शरीर के अन्दर चढ़ा विष में, तथा डँसने वाले साँप के उद्देश्य में कुछ अन्तर रहता है। नागसाँप का विष नशीली दवा की तरह होती है।जिसे प्रकार से अधिक मात्रा में नशीली दवा का सेवन से मनुष्य मर सकता है, उसी प्रकार से नागसर्प के विष से मनुष्य की मृत्यु हो सकती है। मनुष्यों में पूरी जाग्रतावस्था वाले व्यक्ति, तथा कम जाग्रतावस्था वाले व्यक्ति होते हैं। कम जाग्रत वाले व्यक्ति शीघ्र ही निद्रा में चले जाते हैं। अधिक जाग्रत वाले व्यक्ति निद्रा में शीघ्र नहीं जाते हैं। ऐसे लोग कुछ हद तक नींद पर विजय पाते हैं। योगीयों को मन पर विजय पाने की शक्ति होती है। इसलिए इस प्रकार के व्यक्ति अधिक जाग्रत वाले होते है। जाग्रतावस्था वाले मनुष्य को तीन प्रकार से विभाजित किया जा सकता है।पहला अर्थात् कम जाग्रत वाले व्यक्ति की चिकित्सा कर बचाया जा सकता है, दूसरी तरह का अर्थात् अधिक जाग्रत वाले व्यक्ति की बिना चिकित्सा किए बचाया जा सकता है, तीसरा अर्थात् सबसे अधिक जाग्रत वाले व्यक्ति, दूसरे

की सहायता लिए बिना स्वयं जीवित हो सकते हैं। तात्कालिक मरण प्राप्त करने वाले हर व्यक्ति को चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ती है, कुछ लोगों को मात्र ही चिकित्सा की आवश्यकता होती है सूचित कर रहे है। चिकित्सा की जरुरत व्यक्तियों को न पहचान पाना, उन्हें समय पर चिकित्सा न पहुँचा पाना, इस प्रकार के लोग स्वप्न से नींद में जाने की तरह ही, कुछ घंटों के बाद या, कई दिनों के बाद ही तात्कालिक मरण से मरण हो जाता है। मध्य किस्म के जाग्रतावस्था वाले व्यक्तियों को बिना चिकित्सा की आवश्यकता के भी बचाया जा सकता हैं। इस किस्म के व्यक्ति भी कभी-कभी अपने आप जाग जाते हैं। लेकिन दुनिया वाले तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्ति को न पहचान कर, पूर्ण मरण मानकर अन्तिम-संस्कार कर दें, तो उनका पूरा मरण हो जाता है।ऐसी गलतियों से अनेक लोगों का अन्तिम-संस्कार चुका हैं। क्योंकि अन्तिम-संस्कार के बाद स्मरण में आ कर दम घुटने की वजह से पूरा मरण को प्राप्त करना पड़ता है।

मध्यकिस्म के जाग्रतावस्था व्यक्ति को पहचान कर वह मरा नहीं निद्रावस्था में है ग्रहण कर कृष्ण जैसे आध्यात्मिक गुरु ने मृतक के पास जा कर, उनके नाम से पुकार कर तथा हाथ से थपकी दे कर जगाने से मृत समझा व्यक्ति जाग जाता है। मृत समझा व्यक्ति को जागने पर, पास में खड़े होकर देख रहे सारे लोग यह एक महिमा है मानकर मृत व्यक्ति को जिसने जीवित किया उस व्यक्ति की तारीफ या स्तुति करते रहते हैं। अब भी वह मरा नहीं जीवित है कहने के बावजुद भी, इस प्रकार का मरण का होना ग्रहण न कर सकें।ऐसे जीवित करने वाले कई आध्यात्मिक गुरु हैं। आध्यात्मिकता को ही धर्म(सूत्र) की सूचना देने वाले भगवान थे। कुछ भी कहें तात्कालिक मरण से जीवित करने वाले व्यक्ति महान व्यक्ति है कह सकते हैं। आत्मा का अध्ययन करने वाले आध्यात्मिक गुरुओं को आत्मा के विषय में पूरी जानकारी रहती है। इसलिए उन्हें तात्कालिक मरण प्राप्त व्यक्ति के शरीर में आत्मा द्वारा सब स्तंभित करना, अन्दर की श्वास अन्दर ही रह जाना जानकर वैसे व्यक्ति को जीवित करने का सोचते है। कृष्ण ने सान्दीपनि के पुत्र को मृत जानकर वहाँ गए। वहाँ जाने के बाद उनके गुरु सान्दीपनि पुत्र पूरा मृत नहीं, तात्कालिक मरण को मात्र ही प्राप्त कर सो रहा है महसूस किया। और तब उस बालक को वापस निद्रा से जगाने का सोचा। वहाँ खड़े लोगों को दिखलाने के लिए कोई एक रस्म करके मृत बालक को हाथ पकड़ थपकी दे कर पुकारने पर वह बालक गहरी साँस लेकर उठकर बैठा गया। *****

तात्कालिक मरण प्राप्त शरीर क्या सड़ता नहीं ?

पूर्ण मरण शरीर में आत्मा नहीं रहती है। शरीर के हर कण-कण में व्याप्त हर धातुकण से कार्य करवाते हुए आत्मा तात्कालिक मरण प्राप्त शरीर में रहती है। आत्मा के बिना शरीर में धातुकणों में बदलाव आकर धनुंजय नामक वायु उत्पन्न होने की वजह से कण खराब हो जाते हैं। पूरे शरीर में वायु भर जाने की वजह से शरीर फुल कर अंत में फट जाता है। तात्कालिक मरण में आत्म चैतन्यशक्ति पूरे शरीर में न रह कर सिर के मध्यभाग में ब्रम्हनाडी़ में दब जाती है। आत्मा अपनी शक्ति को शरीर से ब्रम्हनाडी़ के अन्दर भेज कर, स्वयं पूरे शरीर में रहने की वजह से शरीर के किसी भाग का धातुकण खराब नहीं होता है। चैतन्यरहित आत्मा पूरे शरीर में व्याप्त होने की वजह से, ताकालिक मरण प्राप्त शरीर में बदलाव नहीं होता है तथा शरीर भी सड़ता नहीं है। हाथों तथा पैरों की हड्डियाँ की नसें दृढ़ न होने की वजह से हाथ, और पैर मुड़ने लगते हैं। आत्मा अपने चैतन्य मात्र को ही ब्रम्हनाडी़ में भेजकर, मात्र वह (आत्मा) ही पूरे शरीर में तात्कालिक मरण में रहना सिद्ध होता है। इस प्रकार के शरीर की हाथ, पैर की हड्डियाँ मुडी़ देखकर आध्यात्मिक गुरुओं ने यह व्यक्ति तात्कालिक मरण को प्राप्त हुआ ग्रहण कर पुन ; जीवित कर पाए थें। जब कोई व्यक्ति मरण काल में जीवात्मा अवसानदशा को पाकर मरता हो तो, वह पूर्ण मरण (कालमरण) होता है। अवसानदशा को पाये बिना मृत्यु हो तो, वह अकालमरण या तात्कालिक मरण भी हो सकता है। कालमरण हो या अकालमरण में आत्मा तथा जीवात्मा शरीर को छोड़कर चली जाती है। वैसे ही अकालमरण हो या तात्कालिक मरण में अवसानदशा नहीं होता है। तात्कालिक मरण प्राप्त शरीर सड़ता नहीं है। इसलिए उनका पुन: जीवित होने की संभावना बनी रहती है। कालमरण में अर्थात् पूर्ण मरण में आत्मा स्थूल तथा सूक्षम शरीर को छोड़कर चली जाती है।अकालमरण में आत्मा स्थूल शरीर को ही मात्र छोड़कर सूक्षम शरीर में रह जाती है। हमें ज्ञात रहना चाहिए तात्कालिक मरण में आत्मा स्थूलशरीर हो या सूक्षमशरीर दोनों को छोड़कर नहीं जाती है। इससे हम कह सकते हैकि तीसरामरण प्राप्त शरीर जीवित होता है।

(बर्फीले समूद्र में 1993 वर्ष में हुई घटना)

जनवरी 2011, 30वीं तारीख को नेशनल ज्योग्रफी टी.वी. चैनल में" ट्रू स्टोरिस " नाम से (Against All Odds) एक घटना प्रसारित हुआ था। उसमें दस लोगों का एक परिशोधक दल को बर्फ से ढ़के समुद्र पर सफर करना पड़ता था। बर्फ पर फिसले छोटे-छोटे वाहनों में वे सफर किया करते थें। हर एक व्यक्ति एक-एक वाहन पर बर्फीले समुद्र पर एक घन्टें में दस, पन्द्राह किलोमीटर की गति से सफर किया करते थें। ऊपर हिम पत्थर जैसी जम कर, तीन या चार फुट की गहराई में ठंड़े पानी का समुद्र होता है। कहीं-कहीं कुछ जगहों पर सील मछलियाँ बाहर निकलने के लिए बर्फ में छेद बनाकर रहती थी। उस प्रकार के छेदों से सावधानी बरतते हुए ध्यानपूर्वक वह परिशोधक दल आगे की ओर बढ़ते रहते थें। 1993 मार्च 21 वीं तारीख को रात दस बजे के समय में उस दल का सदस्य दुर्घटनावश सील मछलियों द्वारा बनाए गए छेद में अपने वाहन सहित समुद्र में गिर गया। लगभग तीन फुट गहरे बर्फ के नीचे ठंड़े पानी में गिरा व्यक्ति बाहर निकल न सका। कुछ मिनटों में ही उनकी पानी में मृत्यु हो गई। 10 बजकर 20 मिनट में उनके दल के लोगों ने उन्हें खोजना आरम्भ किया। लगभग एक घन्टे तक खोजने पर 11 बजकर 20 मिनट में दिखलाई पड़ा।

तबतक उनकी मौत हो चुकी थी और एक घन्टे से पानी में ही था। उन्हे बाहर निकालकर 14 किलोमीटर दूर अस्पताल पहुँचाने में 32 मिनट लगे। डॉक्टर आकर जाँच करने में 8 मिनट लग गए। 12 बजे डॉक्टरों ने उस व्यक्ति में प्राण का न होना महसूस किया। धड़कने रुक कर नाड़ी भी कार्य करना बंद कर दिया। आधुनिक भौतिक शास्त्र के अनुसार सारी परीक्षाएँ उन्हे मृत घोषित कर रही थी। उनकी मृत्यु होकर लगभग अढ़ाई से तीन घन्टें हुए निर्धारित किया गया। इसके बावजुद उन लोगों में से एक डॉक्टर के अन्दर से एक प्रेरणा जागी, और मृत व्यक्ति की चिकित्सा करने की सोची इस प्रकार से किसी दूसरे डॉक्टर के मन में विचार नहीं आया। फिर भी एक डॉक्टर ने, मृत व्यक्ति की चिकित्सा करने की सोचना, आत्मा द्वारा प्रेरित है, ऐसा मैं सोचता हूँ। चिकित्सा करने की सोचनेवाले डॉक्टर के दिमाग में जो योचन आया उसी के अनुसार उस शरीर की चिकित्सा की गई। हालांकि वह बहुत बड़ा अस्पताल था, उसमें सारी चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध थी, रक्त बदलने का यंत्र सहित जरुरत के सारे यंत्रों का होना विशेष था। सारे यंत्रों के

होने की वजह से डॉक्टर ने धैर्यपूर्वक अपना कार्य करना शुरु किया। उनके दल के बाकि सदस्यों(डॉक्टरों) ने भी उनके साथ कार्य किया।

सारे डॉक्टरों ने मिलकर दो घंटे तक श्रम करके चिकित्सा किया। तबतक रुकी हुई दिल की धड़कने, धड़कना शुरु किया। दिल की धड़कने पद्धति से न धड़क कर कम तथा तेजी से धड़कना देख कर डॉक्टरों ने तुरन्त दूसरे यंत्र की सहायता ली, दिल सही तरीके से धड़कने लगा । दिल का धड़कना, रक्त का संचार होना, श्वास चलना, नब्ज भी चलने लगा। इस प्रकार से 2 घंटे 12 मिनट तक चिकित्सा करने पर मृत व्यक्ति दोबारा जीवित हुआ। वह व्यक्ति पाँच घंटों तक मृत रहकर दोबारा जीवित हुआ। वहाँ के डॉक्टरों उनकी चिकित्सा को मरण पर विजय पाना समझ कर आनन्दित हुए। यह घटना बहुत पुरानी नहीं है बल्कि 19 साल पुरानी 1993 वर्ष में मार्च 21 वीं तारीख को सत्य कहानियाँ (TRUE STORIES) नाम से टी.वी.चैनल में प्रसारित किया गया था। यह आधुनिक चिकित्सा पद्धति से, आधुनिक डॉक्टरों के समक्ष हुई घटना थी। इसलिए इसे किसी भी अलोचना के लिए, या कोई भी नास्तिक इसे नकारनें की,तथा इसे अन्ध-विश्वास कहने की कोई संभावना ही नहीं है।

(जम्मु–कश्मीर में अब्दुल अजीज की कहानी)

2009 दिसम्बर 7वीं तिथि टी.वी 9 में दोपहर 1-30 मिनट में एक कहानी प्रसारित हुआ था। उसके एक सप्ताह पहले 2009 नवम्बर, 30वीं तिथि को जम्मू-काश्मीर के राजोरी नामक गाँव में अब्दुल अजीज नाम का 60 वर्षीय वृद्ध की मौत हुई थी। वह मुस्लिम परिवार से था इसलिए इस्लाम रस्मों- रिवाज के अनुसार उन्हे जमीन के अन्दर दफनाया गया। उन्हे दफनाने के तीन दिनों के बाद उनकी मौत असाधारण थी, किसी ने उनकी हत्या की, पता चला। मामला पुलिस तक पहुँचा, फौरन पुलिस ने रपट लिख कर श्मशान जाकर अब्दुल अजीज के शव को उनकें रिश्तेदारों के सामने बाहर निकाला गया। अब्दुल अजीज के शव को शव-परीक्षा के लिए सरकारी अस्पताल भेजा गया। डॉक्टर ने शव-परीक्षा करना शुरु किया। पहले सिर के भाग की परीक्षा करने हेतु सिर पर मारा। सिर के ऊपर चोट लगी। वहाँ सब आश्चर्यचकित रह गए तबतक मृत अब्दुल अजीज उठकर बैठे और पुछने लगे मेरे साथ क्या कर रहे हैं। ऐसा उनका उठ कर बैठना तथा पुछना

डॉक्टरों को विश्वास ही नहीं हो रहा था। फिर भी डॉक्टर ने खुद को सम्भाल कर उनके पुछे प्रश्न का जवाब देते हुए कहा तुम्हारी शव-परीक्षा कर रहें हैं। इस पर अब्दुल अजीज ने कहा मैं तो जिन्दा हूँ। इतने में डॉक्टर ने अब्दुल अजीज के रिश्तेदारों को सारी बातें बताई, बाहर खड़े रिश्तेदारों ने आकर उन्हे साथ ले गए। तीन दिन पहले अब्दुल अजीज की मृत्यु हो जाने पर पन्द्राह मिनट के जाँचने के बाद मैंने मृत कहा, अजीज के विषय में अदभुत बात हुई डॉक्टर ने कहा। राजोरी गाँव के लोगों ने भी हमनें अपने हाथों से दफनाया अब्दुल अजीज तीन दिनों के बाद जीवित होना, आश्चर्य व्यक्त कर रहे थें। यह घटना को घटे 2 वर्ष 6 महीनें बीत चुके थे। इस घटना को सब देखें इसलिए प्रसारित किया गया। यह घटना डॉक्टरों के समक्ष ही घटित हुई थी। इसलिए इसे कोई भी खंड़न नहीं कर सकता हैं, तथा अन्ध-विश्वास कहने की कोई गुंजाइश ही नहीं है।

(विशाखा जिला में हुई एक घटना)

विशाखा जिला में अरुकु जाने वाले रास्ते में श्रृंगवरपुकोट (S.कोटा) नामक गाँव पड़ता है। श्रृंगवरपुकोटा मंडल से 12 किलोमीटर सारेपुरम नामक गाँव है। सारेपुरम ग्राम में 67 वर्ष की समुद्रम्मा नाम की एक वृद्ध महिला रहती थी। उन्हें लगभग दस वर्षों से हाई.बी.पी. तथा मधुमेह की शिकायत थी। वह श्रृंगवरपुकोटा में सीनियर डॉक्टर धर्मलिंगाचारी के पास अपना इलाज करवाती थी। यम.बी.बी.यस. डॉक्टर धर्मलिंगाचारी अच्छे नामी लगभग 60 वर्षीय अनुभवी डॉक्टर थे। अब से तीन वर्ष पहले एक रोज शाम के 6 बजे के समय में समुद्रम्मा को डॉक्टर धर्मलिंगाचारी के पास लाया गया, इससे पहले ही सरकारी अस्पताल ले जाया गया,वहाँ मृत घोषित करने के पश्चात् यहाँ लाया गया। डॉक्टर ने उनकी जाँच की, उस महिला को न ही बी.पी. की शिकायत थी, न ही नाड़ी मिल रही थी। उनका श्वास न चलने, तथा नाड़ी न मिलने की वजह से डॉक्टर ने मृत निर्धारित करते हुए " घर ले जाइए, इनकी मृत्यु को गई, इन्हे इलाज की आवश्यकता नहीं है कहा। " वें लोग 12 किलोमीटर दूर उनके गाँव ले गए। तब तक बहुत रात हो चुकी थी सुबह ही अन्तिम-संस्कार करने का निश्चय किया। सुबह होते ही बारिश शुरु हो गई। दो दिनों तक मूसलाधार बारिश होती रही, बाहर निकलना नामुमकीन हो गया। समुद्रम्मा का शव को तीन दिनों तक बरामदा में ही रखा गया। तीन दिनों के बाद अर्थात् चौथे दिन सुबह वह उठकर बैठ गई और लोगों को

पुकारने लगी। उनके रिश्तेदार उन्हे जीवित देख कर तुरन्त डॉक्टर को फोन किया। पन्द्राह दिनों के बाद डॉक्टर के पास ले जाया गया। डॉक्टर ने पुछा, तुम तीन दिनों तक मरी हुई थी न! उस वक्त तुम्हे यमदूत या यमलोक जैसा कुछ भी दिखाई दिया होगा, उस महिला ने कहा, मुझे ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं दिया। यह घटना एक डॉक्टर के समक्ष तीन साल पहले घटी। इसलिए इसे किसी के लिए भी नकारना, तथा अन्धविश्वास कहने की संभावना ही नहीं हैं।

सौ वर्ष पूर्व मास्टर सी.वी.वी. रामन जी कोयंबतूर में दत्तक माता को जीवित किया था ।यह विषय मालूम हुआ पर कैसे जीवित किया यह पूरी तरह नहीं मालूम है। 1993 वें वर्ष में बर्फ जमे समुद्र में डुबकर मर गए व्यक्ति को पाँच घंटों के बाद डॉक्टर ने, उन्हे जीवित किया। पता चला कि उनका इलाज करके बचाया गया। दो साल पहले जम्मू-काश्मीर में मृत अब्दुल अजीज तीन दिनों बाद बिना किसी इलाज के जीवित हो गए। विशाखा जिला श्रंगवरपुकोटा के समीप में हुई एक घटना मृत समुद्रम्मा बिना किसी इलाज के तीन दिनों बाद जीवित हो गई। श्रीकृष्ण, तथा ईसा के समय में हो, या वर्तमानकाल हो या मध्यकाल हो अनेक लोगों ने तात्कालिक मरण को प्राप्त किया, तथा वापस जीवित हो गए। तात्कालिक मरण के विषय को वर्तमानकाल में भले ही हम न पहचान पाए हों, परन्तु तीसरा मरण का होना सिद्ध होता है। इस वर्तमानकाल में तात्कालिक मरण के विषय में जानकारी रखने के बावजुद भी, मनुष्य मरण के बाद उनके शव को अन्तिम-संस्कार के लिए ले जाते समय, उतरन-खलिहान एक प्रथा है जिसमे उतरन-खलिहान के पास शव को उतार कर शायद जीवित हो सोचकर, चेहरे पर ढ्के कपड़े को हटा कर देखा जाता है। इतना ही नहीं मृत व्यक्ति को उसके नाम से पुकारना,तथा मृत व्यक्ति को थपकी देकर पुकारा जाता है। वर्तमानकाल में भी कई प्रान्तों में उतरन-खलिहान की प्रथा चली आ रही है। कई प्रान्तों में इन्दु प्रथा का नामो-निशान मिट गया है, तथा उतरन-खलिहान की प्रथा लगभग समाप्त हो गई है। **उतरन-खलिहान की प्रथा ज्ञान से संबंधित होने के बावजुद इसका नामों-निशान मिट गया है।** चार व्यक्तियों द्वारा अर्थी उठाकर ले जाने के बजाए, चार चक्कों का मोटर वाहन पर मृत व्यक्ति को श्मशान ले जाया जा रहा है।

पूर्वकाल में सारे मनुष्य तात्कालिक मरण का विवरण जानने के बावजुद, तीसरा मरण अर्थात् तात्कालिक मरण को प्राप्त व्यक्तियों को मनुष्य अनजाने में श्मशान घाट लेकर चले जाते थें, इस प्रकार के

मरण प्राप्त व्यक्ति कोई भी हो, उतरण-खलिहान के पास दोबारा जीवित होने की संभावना हो सकती है, मानकर बड़े-बुजुर्ग उतरण-खलिहान के पास शव पर से कपडा़ हटाकर देखना, तथा पुकारना किया करते थें। उतरण-खलिहान के पास कपडा़ हटाकर देखने पर मालूम पडा़ कि मृत व्यक्ति जीवित हो गया। इतना ही नहीं नाम से पुकारा गया तो मृत व्यक्ति नींद से जागने की तरह उठ कर बातें करने लगा। तथा मृत व्यक्ति को जोरों से थपकी देकर जगाने से उठ कर बैठ जाते थें। इस प्रकार से पूर्व काल में कई लोगों में से एक या दो व्यक्ति दोबारा जीवित होते थे। इसलिए उतरन-खलिहान के पास में आज भी शव पर से कपड़ा हटाकर देखना, तथा थपकी देकर पुकारा जाता है। तात्कालिक मरण का विवरण से अनजान लोग मृतव्यक्ति शायद जीवित हो, अनजाने में थपकी देकर नहीं पुकार रहें हैं। आज भी कई लोग उतरन-खलिहान के पास अर्थी को उतार कर, अर्थी को उठाने वाले मात्र आगे-पीछे अदला-बदली करते हैं, उतरन-खलिहान का मतलब या प्रथा से अनजान रह गए हैं। इसलिए मृत व्यक्ति शायद जीवित हो सोचकर जोरों से थपकी देना तथा पुकारना, नहीं कर रहें हैं।

पूर्वकाल में तात्कालिक मरण प्राप्त अनेक लोगों की अर्थी उतरन-खलिहान के पास उतारे जाने पर जीवित हुए। उतरन-खलिहान के पास मृत व्यक्ति शायद जीवित हो जाए इस उम्मीद से थपकी देना, तथा पुकारा करते थें। तात्कालिक मरण प्राप्त सारें व्यक्तियों में से कुछ लोग जीवित हो जाते थे। जिन्हें इलाज की आवश्यकता थी वें बच न सकें। यदि उनकी भी समय पर चिकित्सा की होती तो वें भी बच गए होते। अधिक जाग्रतावस्था वाले व्यक्तियों का बिना इलाज के उतरन-खलिहान के पास पुकारने, तथा थपकी देने से जीवित हो जाते थें। मृत व्यक्ति उतरन-खलिहान के पास जीवित होने का कारण क्या है? अनेक लोगों के मन में सवाल उठ सकता हैं, उस समय के बड़े-बुजुर्ग इसे एक कहानी का रुप में कहा करते थें। बड़े-बुजुर्गों के इसे कहानी के रुप में कहने की वजह से सबलोग एक निष्कर्ष में पहुँचे कि मृत व्यक्तियों का मरण सच में मरण नहीं है, वें कुछ देर के लिए ही शरीर छोड़कर जाते हैं, वापस लौटते समय में कहीं फँस जाने की वजह से शरीर मरा हुआ दिखालाई पड़ता है, उस शरीर का जीवात्मा फँसे हुए स्थान से निकल कर वापस अपने शरीर में लौटेगा, ऐसा माना जाता रहा। इस कहानी में कहीं भी सत्यता नहीं है, कहानी असत्य होने के बावजुद मनुष्य पूरी तरह से नहीं मरता है, जीवात्मा दूसरे जन्म न लेकर, कहीं कुछ देर रहकर वापस उसी शरीर में जीने के लिए लौटेगा, इस सच्चाई को माना गया। इस प्रकार की कहानी के द्वारा लोग

मृत व्यक्ति जीवित हो सकता है सोचकर उतरन-खलिहान में रुका करते थें। वर्तमानकाल में, पूर्वकाल के बड़े-बुजुर्गों की कही कहानी हो या उतरन-खलिहान के बारें में हो, अनजान होकर रह गए हैं।

पूर्वकाल में मृत व्यक्तियों में सब लोगों की पूरी मौत नहीं होती है, कुछ व्यक्ति वापस जीवित हो सकते हैं इस बात का यकीन दिलाने के लिए एक कहानी गढ़ी गई, लोगों की समझ में आये बड़े-बुजुर्गों ने बड़ी ही होशियारी से कैसे बताया आइए जानकारी करते हैं। मनुष्य के शरीर में जीवात्मा प्रत्येक रुप में रहती है, मनुष्य जब निद्रावस्था में रहता है तब जीवात्मा बाहर जाकर वापस लौटता है, जीवात्मा का बाहर जाना तथा वापस लौटना कहा गया था। जीवात्मा अपने शरीर को छोड़ कर जाते समय शरीर की नाभि द्वारा बाहर निकलना, नाभि से एक अदृश्य धागे के साथ जितना दूर भी जाना, तथा वापस लौटते समय उस धागे के सहारे अपने शरीर को पहचानकर उसमें प्रवेश करता है। एक घटना के बारें में बड़े-बुजुर्गों ने कुछ इस प्रकार कहानी में कहा। एक आदमी को रात में सोने से पहले बड़ी प्यास लगी थी, पानी पीकर सोता हूँ सोचा। परन्तु पानी पीने से पहले ही नींद आ गई। सोने से पहले पानी पीना है सोचने की वजह से मध्य रात्रि में जीवात्मा शरीर को छोड़कर नाभि द्वारा बाहर आकर, अपने ही घर के अन्दर में एक घड़े के अन्दर घुस कर पानी पी रहा था, इतने में उसी समय में उनकी पत्नी किसी आवाज को सुनकर बावर्ची में आयी, घड़े के ऊ पर ढ़क्कन न रखा देखकर, तुरन्त पास में पडा ढ़क्कन को घड़े के ऊपर ढ़ककर सोने चली गई। घड़े के अन्दर पानी पी रहा जीवात्मा घड़े के ऊपर ढ़क्कन ढ़के रहने के कारण बाहर न निकल पाया और घड़े के अन्दर ही रह गया। घड़े में फँसा जीवात्मा शरीर में वापस प्रवेश न कर पाने की वजह से, सुबह जागने के बाद सब ने उनके शरीर को देखकर मौत हो गई सोचा। सारे घरवाले तथा बाहरवालों ने बिना जीवात्मा के शरीर को देखकर मृत निर्धारित किया। उस दिन घर का मालिक मर जाने के कारण घर में खाना नहीं बना। इसलिए घड़े पर से ढ़क्कन को किसी ने नहीं हटाया। सायंकाल रिश्तेदारों ने शरीर का अन्तिम-संस्कार करने के लिए, शव-शय्या बनाकर, शव-शय्या पर लिटाया तथा बाँध कर श्मशान ले जाया गया।

शव को ले जाने के बाद घर में एक वृद्ध ने पानी पीने के लिए अन्दर जाकर घड़े के ऊ-पर रखे ढ़क्कन को हटाया। ढ़क्कन के हटते ही जीवात्मा तुरन्त बाहर आकर अपने शरीर को न पाकर क्या हुआ होगा समझकर, अपने नाभि-रस्सी के सहारे शीघ्र ही अपने शरीर के पास पहुँचा। शव-शय्या पर लिटाय गया शरीर

में प्रवेश किया। शरीर को रस्सी से शव-शय्या के साथ बाँधा गया था। इस वजह से हिल-डुल नहीं पा रहा था। तथा मुँह में चावल भरा हुआ था। इस वजह से जोरों से चिल्ला नहीं पा रहा था। रास्ते में ही उतरन-खलिहान पड़ता था। उतरन-खलिहान के पास शव को नीचे उतारकर चेहरे से कपड़ा हटाकर देखा तो आँखें खुली हुई थी। उसे जीवित देखकर, रस्सियों को खोला गया। उतरन-खलिहान के पास कुछ लोग जीवित हो सकते हैं,यह सच है विश्वास करने लगें। इस प्रकार की घटना असत्य नहीं है। क्योंकि हम लोगों को मालूम हो गया कि तात्कालिक मरण होता है। परन्तु तात्कालिक मरण का पूरा विवरण जानें तो यह जीवात्मा के लिए निद्रा जैसी है, तथा शरीर के लिए मरण जैसी है सिद्ध होता है। कुछ भी हो इस प्रकार की कहानी से उतरन-खलिहान के पास शव को देखना चाहिए, यदि मनुष्य की पूरी मौत न हो तो उतरन-खलिहान के पास जीवित हो सकता है समझ में आया। इस कहानी में जीवात्मा निद्रा समय में अपने जरुरत के लिए शरीर को छोड़कर बाहर जाना पूरी तरह असत्य है।

वर्तमानकाल के मनुष्य भूतकाल के मनुष्यों से भी ज्यादा पूर्णत; अज्ञानता में रचे-बसे हैं। पहले लोग अशिक्षित होने के बावजुद भी आध्यात्मिकता में उनकी पकड़ ज्यादा थीं। इस वजह से जन्म के विषय में हो या मरण के विषय में हो, उन्हें कोई गलतफहमी नहीं होती थी। परन्तु आज जन्म का सिद्धान्त हो या मरण का सिद्धान्त, से अनभिज्ञ होने की वजह से, मनुष्य जन्म लेने समय में शिशु शरीर के अन्दर जीवात्मा प्रवेश से पहले ही उस शिशु की गर्भ में ही मृत्यु हो गई समझ कर गलतफहमी होना, श्वास आए बिना शिशु-शरीर का, तथा जीवात्मा शरीर में प्रवेश से पहले ही अन्तिम-संस्कार कर दिया जाता है। **वैसे देखा जाय तो पूरे देश भर में एक वर्ष में कई हजार बच्चों को जन्म से पहले ही मार दिया जाता है**। और इसी तरह से मनुष्य मरण समय में वह पूर्ण मरण प्राप्त किए बिना, जीवात्मा शरीर को छोड़कर जाए बिना, श्वास शरीर से जाए बिना मृत्यु हो गई भ्रम से, डॉक्टर सहित गलतफहमी का शिकार होकर, मृत निर्धारण कर रहें हैं। उस व्यक्ति की वास्तव में मृत्यु न होने के बावजुद अन्तिम-संस्कार किया जा रहा है। मरण विषय से अनभिज्ञ कितनों ने ही, मृत जैसा दिखलाई पड़ने वाले व्यक्तियों को मृत समझकर विश्वास कर रहें हैं। मृत व्यक्तियों में असम्पूर्ण मरण प्राप्त व्यक्ति भी हो सकते हैं अनजाने में, एक वर्ष में पूरे देश भर में लगभग कई हजारों लोगों का अन्तिम-संस्कार कर सच में मार दिया जा रहा है। **शिशु जन्म लेते ही रोया नहीं**, **गर्भ में ही मर गया कहना**, **विज्ञानता नहीं अज्ञानता है। वैसे ही मनुष्य की श्वास न चलने मात्र से ही जीवात्मा शरीर को छोड़कर चला**

गया मान लेना भी अज्ञानता ही होती है। श्वास (श्वास) न चलने मात्र से ही शरीर का जन्म समय हो, या शरीर का मरण समय हो, जीवात्मा का विषय बिना जानें जल्दीबाजी में निर्धारण नहीं करना चाहिए।

*****

तात्कालिक मरण को जान कर क्या प्राप्त किया जा सकता है?

तात्कालिक मरण कर्मानुसार लब्ध होता है पहले भी बताया जा चुका है। यह कुछ लोगों की जानकारी में लब्ध होता है, कुछ लोगों को बिना जानकारी के लब्ध होता है। जानकर लब्ध होना, या न जानकर लब्ध होना। यह पहले ही कर्म में निर्णीत होता है। तीन सौ साल पहले आन्ध्र प्रदेश के, कड़पा जिला में कन्दिमल्लायपल्ले नामक गाँव में पोतुलुरि वीरब्रम्हम जी रहा करते थे। वे बहुत बड़े ज्ञानी, तथा ब्रम्हयोगी थे। योग दो प्रकार के होते हैं, पहला ब्रम्हयोग। ब्रम्हयोग में आत्म चैतन्य कार्य नहीं करती है, पहले भी बताया गया। योग समय में मनुष्य के शरीर के अन्दर क्या होता है उस विषय में वीरब्रम्हम जी ने अपने तत्वज्ञान में वर्णन किया। उस तत्वज्ञान का विवरण देखें तो ब्रम्हयोगी के शरीर में होने वाले परिवर्तनों की जानकारी हो सकती है। ब्रम्हयोग में प्रत्यक्ष श्वास नहीं रहता, परन्तु शरीर के अन्दर अप्रत्यक्ष चैतन्य भी एक स्थान पर ठहर जाती है। तात्कालिक मरण में पहले श्वास को देखकर, उसके बाद शरीर की अन्दर की हरकतों को देखा जाता है। इन दोनों के न होने के बावजुद मरण विषय को पूर्णतया जानने वाले, यह तात्कालिक मरण है पहचान लेते हैं। मरण विषय से अनभिज्ञ मनुष्य को सच में मृत्यु हो गई गलतफहमी हो जाती है। नासिक में श्वास, तथा शरीर में नहीं होने पर, मनुष्य कोई एक मरण को प्राप्त करना सहज है। परन्तु ब्रम्हयोग भी लगभग मरण जैसे ही होती है। धड़कनें रुक जाती हैं। पहले तात्कालिक मरण के बारें जानकारी की गई थी। अब तात्कालिक मरण समान ब्रम्हयोग के बारें में जानकारी करेंगें।

योग दो प्रकार के हैं, पहला कर्मयोग शरीर के अन्दर अहं पर आधारित है। जब अहं कार्य करना बंद कर दें तब मनुष्य कर्मयोग प्राप्त करता है। अहं कभी भी अपने-आप नहीं ठहरता है। इसलिए मनुष्य को प्रयत्नपूर्वक अहं का ठहराव करना चाहिए। मनुष्य के इस प्रयत्न को योग साधना कहते हैं। प्रयत्न में सफल होकर अहं कार्य

thraithashakam-36

करना बंद कर दे तो, वह कर्मयोग होगा। ब्रम्हयोग शरीर के अन्दर मन पर आधारित होती है। जब मन कार्य करना बंद कर दें तब मनुष्य ब्रम्हयोग को प्राप्त करना हुआ। शरीर के अन्दर मन भी अपने-आप नहीं टहरता है। यहाँ पर अच्छी तरह योचना करने की आवश्यकता है, अहं हो, या मन हो, दोनों ताकतवर हैं, वें दोनों कभी भी अपने-आप नहीं ठहरेंगें। अहं, तथा मन का विवरण ज्ञात करने के लिए पहले एक उदाहरण देखते हैं।

एक घर का मालिक, कुत्ते के दो बच्चों को बचपन से पालन-पोषण कर रहा था। बचपन से ही पालने वाले मालिक के प्रति दोनों कुत्तें स्वामिभक्ति से रहते थे। उस घर का मालिक दोनों कुत्तों का नाम लम्बू और जम्बू रखा। लम्बू और जम्बू नाम के दोनों कुत्तें एक ही घर में पलने के बावजुद दोनों अलग-अलग स्वभाव के थें। उनका स्वभाव जैसा भी हो अपने मालिक के प्रति आदरभाव, तथा स्वामिभक्ति रखते थें। इसलिए घर का मालिक कुछ भी कहें उनका कहा मानते थें।मालिक अगर बैठने को कहे तो बैठना, तथा उठने को कहे तो उठ जाते थें। एक दिन एक अपरिचित व्यक्ति घर में घुसने का प्रयत्न करने लगा, उन्हें चोर समझ कर उन पर हमला कर उसे घर से भगा दिया। उनके घर के दो दरवाजे थे। एक-एक द्वार पर एक-एक कुत्ता चौकीदारी करता था। सामने के द्वार के पास लम्बू नाम का कुत्ता किसी को भी उस तरफ से आने नहीं देता था। पीछे की द्वार से जम्बू भी अपने द्वार के अन्दर से किसी को भी अन्दर घुसने नहीं देता था। उस घर का मालिक जानता था कि उनके कुत्तें बहुत अच्छे से घर की रखवाली कर रहें हैं। इसलिए उन कुतों को रात में पहरा में रखकर, सबेरे सोने के लिए उनके लिए बनाया गया कुत्ता घर में भेज देते थे। अपने मालिक की बात मानकर वें दोनों कुत्तें, रात में पहरा देकर, सुबह कुत्ता घर में जाकर आराम करते थें।

मालिक जब भी पास आता पहचान जाते थें। एक दिन एक चोर उस घर के मालिक का वेष धारण कर, उस घर में चोरी करने की सोची। घर के अन्दर सारे धन-दौलत को चुराने के लिए एक योजना बना कर, चोर उस घर के आगे द्वार के पास गया, उसे देखते ही लम्बू नाम का कुत्ता जोरों से गुर्राने लगा। उस चोर ने द्वार पर पहरा दे रहे कुत्ते को, खुद को उस घर का मालिक होने का यकीन दिलाने की कोशिश करने लगा। परन्तु कुत्ता अपने मालिक को पहचानता था। इसलिए उस पर हमला करने के लिए आगे बढ़ा। वह चोर भाग कर पीछे दरवाजे के पास गया। वहाँ जम्बू नाम का कुत्ता पहरा दे रहा था, चोर ने वहाँ भी मालिक

thraithashakam-36

का वेष बनाकर घर के अन्दर घुसने की कोशिश की। परन्तु उस कुत्ते ने भी वह मालिक नही है पहचान लिया और भौंक कर उस चोर को भगा दिया।

इस उदाहरण के अनुसार देखा जाय तो दोनों कुत्तें अपने मालिक के अलावा दूसरे की बात मानते नहीं हैं। इसी प्रकार से शरीररुपी घर में, मालिक अर्थात् आत्मा, तथा लम्बू और जम्बू नाम के कुत्तें अर्थात् मन तथा अहं रहते हैं। जिस प्रकार कुत्तें अपने मालिक की आज्ञा मानते हैं, उसी प्रकार मन तथा अहं आत्मा की आज्ञा मानते हैं। चोर मालिक का वेश बनाकर यकीन दिलाने की जितनी भी कोशिश करे, कुत्तें चोर पर यकीन नहीं करेंगें। वैसे ही जीवात्मा भी मन तथा अहं को मालिक अर्थात् आत्मा होने का हजार कोशिश करे, व्यर्थ है। मन तथा अहं को जीवात्मा अपने काबू में करने की कोशिश करना, आत्मा के अधीनता में मन तथा अहं जीवात्मा की बात अनसुनी करना सिद्ध होता है। घर का मालिक जिस तरह से कुत्तों को रात में पहरा में रख कर, दिन में सोने के लिए भेजता है, उसी तरह शरीररुपी गृह में अहं तथा मन को आत्मा दिन में कार्य में लगवा कर, रात्रि में निद्रा में भेजती है। इसी प्रकार से हमारे शरीर में मन तथा अहं दोनों आत्मा की आज्ञा मानते हैं। जाग्रतावस्था में अहं तथा मन कार्य करना, निद्रावस्था में अहं तथा मन दोनों विश्राम करते हैं। **यदि दिन के समय स्मरण में अहं कार्य न करे तो वह कर्मयोग होता है। उसी प्रकार से स्मरण में रहकर मन कार्य न करे तो वह ब्रम्हयोग होता है।** मालिक ने जिस प्रकार से लम्बू तथा जम्बू कुत्तों को रात में पहरा देने के लिए नियुक्त किया, वैसे ही आत्मा ने मन तथा अहं को दिन के समय में कार्य करने हेतु नियमित किया। यदि मालिक द्वारा नियुक्त कुत्तें चोर की बात मानकर, अपना कार्य न करें तो, चोरी हो जायेगी। और कुत्तें भी चोर की बात मानी। उसी प्रकार से आत्मा की सुन, आत्मा के आज्ञानुसार, कार्य करने वाला मन जाग्रावस्था में ही, आत्मा की आज्ञा न मानकर अपना कार्य बिना किए ठहर जाए तो जीवात्मा की आज्ञा माननी हुई। जिस तरह कुत्ता अपना कार्य न करे तो चोरी को जायेगी, उसी तरह से मन अपना कार्य न करे तो जीवात्मा, आत्मा का धन (आत्मधन) चोरी कर लेगा। और तब योग होगा। जाग्रतावस्था में मन कार्य करे तो वह ब्रम्हयोग होगा। वैसे ही जाग्रतावस्था में अहं कार्य न करे तो वह कर्मयोग होता है।

आत्मा अधिपति शरीर में कार्य कर रहें मन तथा अहं दोनों निद्रावस्था में कार्य न कर, जाग्रतावस्था में कार्य करना उनका प्राकृतिक धर्म है। किन्तु जाग्रतावस्था में कार्य न करना मन तथा अहं के लिए अधर्म होता

thrithashakam-36

है। मन तथा अहं प्रकृति द्वारा जनित है इसलिए मन हो या अहं हो अपना कार्य न करना प्रकृति के लिए अधर्म होता है। परमात्मा के लिए धर्म होगा। आत्मा अधिपति होकर, प्रकृति धर्मों को प्रकृति द्वारा बना शरीर को शक्ति देती है। इसलिए मन का कार्य करना माया (प्रकृति) के लिए धर्म होता है तथा अहं कार्य करना भी धर्म होता है। परमात्मा के लिए अधर्म होता है। जाग्रतावस्था में मन कार्य न करे तो वह दैवधर्म के अनुसार ब्रम्हयोग होता है। वैसे ही जाग्रतावस्था में अहं कार्य न करे तो वह कर्मयोग होता है। प्रकृति द्वारा जनित शरीर के अन्दर मन तथा अहं द्वारा ही ब्रम्हयोग, तथा कर्मयोग होना सिद्ध होता है।

ब्रम्हयोग को अच्छी तरह से समझना हो तो ऊपर बताए गए उदाहरण को अच्छी तरह से समझना होगा। कुत्ता को प्यार से सहला कर , या बलपूर्वक काबू में किया जा सकता है। कुत्तें को स्वादिष्ट भोजन देने से नहीं भौकेगा। बलपूर्वक यानि दूसरी प्रक्रिया में चुपके से कुत्ते को पकड़ कर मुँह बाँध देना। ऐसा करने की वजह से वह न मुँह खोल पायेगा, न ही भौंक पायेगा। पहली पद्धति में मन प्रयत्नपूर्वक बिना कार्य किए ठहराये जाने को योग साधना कहते हैं। बहके मन को बहकने से रोकने के लिए, बहुत समय तक बिना कार्य किए रोके रखने की आदत डालनी पड़ती है। इसके लिए बहुत समय लग सकता है। और दूसरी पद्धति में मन को बलपूर्वक रोके रखना एक तरह से यह थोड़ा कठिन, तथा खतरनाक हो सकती है, इसके बावजुद इसमें शीघ्र सफलता मिलती है। बहुत ही कम लोगों ने इस दूसरी पद्धति का आचरण किया। जिन्होंनें इस पद्धति का आचरण किया, उनके सूत्र क्या थें, देखते हैं। मन का ठहराव ही ब्रम्हयोग होता है। जब मन ठहरता है उससे अनुसंधान होकर श्वास भी रुक जाता है। श्वास रुक जाने से शरीर बाहर से मृत नजर आता है। ब्रम्हयोग में व्यक्ति की बाह्य्य प्रपंच से संबंध टूट जाता है। वैसे व्यक्ति आसन में बैठे रहने की वजह से, वह व्यक्ति योग करने वाला योगी है, उनका श्वास न चलने के बावजुद, उनका योग में रहना ही समझते हैं, मृत नहीं समझते हैं।

ब्रम्हयोग में मन ठहर जाने की वजह से बाहरी श्वास भी ठहर जाती है। और तात्कालिक मरण में पहले श्वास ठहरने की वजह से अन्दर मन ठहर जाता है। ब्रम्हयोग हो या तात्कालिक मरण हो जीवात्मा शरीर को नहीं छोड़ता है। जीवात्मा सजीव, आत्मा सहित शरीर के अन्दर वास करता है। **मन पहले ठहरे पश्चात् श्वास ठहरता है, यदि श्वास पहले रुके पश्चात् मन का ठहराव होना कुछ लोगों ने ग्रहण कि**या। कुछ

लोगों ने साधना कर, श्वास को शरीर के अन्दर भेज कर रोक रखते हैं। शरीर से बाहर श्वास का जाना शाश्वत मरण होता है। श्वास शरीर के अन्दर जाकर रुक जाए तो वह मरण की जैसी होती है, किन्तु पूरा मरण नहीं। मरण जैसी को तात्कालिक मरण कहते हैं। श्री पोतुलूरि वीरब्रम्हम जी ने श्वास को बाँधकर, मन को बाँधा। श्वास को शरीर के अन्दर ही रोकने को कुंभक कहते हैं। श्वास का कुंभक करना भी कहते हैं। श्वास को बाहर न छोड़कर अन्दर ही रोके रखने को प्राणायाम भी कहते हैं। कोई कुछ भी करें जाग्रतावस्था में मन को बिना कार्य किए बाँधकर रखना, ब्रम्हविद्या शास्त्र के अनुसार ब्रम्हयोग होता है। पूर्व कुछ लोगों ने ब्रम्हयोग को मन द्वारा सफलता प्राप्त की। कुछ लोगों ने श्वास द्वारा सफलता हासिल किया। यह साधना ज्ञान जानकर करने से ही, करने वाला योगी कहलाता है, तथा योगशक्ति अर्जित होती है। दैवज्ञान के बिना श्वास का कुंभक कर, साधना कर श्वास को एक माह, या एक साल तक रोका जा सकता है। इस प्रकार के लोग में श्वास ठहरने तक निद्रा में रहते हैं, तात्कालिक मरण को प्राप्त करते हैं, परन्तु जाग्रतावस्था में होने पर भी योग की प्राप्ती नहीं होती है।

वीरब्रम्हम जी दैवज्ञान के ज्ञाता ब्रम्हयोगी थे, उन्होंने अपने अन्दर मन पर विजय न पाकर, बाह्य्य श्वास को अपने अन्दर बंधक कर, मन को स्वाधीन में लाकर, कई वर्षों तक समाधि में जाग्रतावस्था में रहने वाले ब्रम्हयोगी थे। प्राणायाम द्वारा जीवित रहा जा सकता है समझाने निमित्त वीरब्रम्हम जी, लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व भूसमाधि में सजीव बैठे थे। उन्हे भूमि में समाधि करने के बावजुद उनकी मृत्यु नहीं हुई। मैं मरुंगाँ नहीं पहले ही कह कर समाधि के अन्दर चले गए। उन्होंनें श्वास का कुंभक कर रोके रखने कि विद्या को ब्रम्हज्ञान सहित सीखे थे। इसलिए उन्होंने तात्कालिक मरण को प्राप्त करने पर भी वह ब्रम्हयोग हुआ। ब्रम्हयोग जैसी तात्कालिक मरण, उनके बिना जानकारी के अनेक लोग प्राप्त करते हैं, पहले ही जान चुके हैं। उस प्रकार के तात्कालिक मरण में पहले मन ठहरता है पश्चात् श्वास अन्दर ठहर जाती है। कई लोग इसी तरह साधना कर, श्वास को बंधक कर, बाह्य्य सब की नजर में मृत, अन्दर तात्कालिक मरण पाना, कुछ समय पश्चात् निद्रा से जागने की तरह जागना, मर कर कुछ समय पश्चात् जीवित होने जैसे नजर आते हैं। यही काम यदि कोई गरीब करता है तो उसे हम मदारी का खेल कहते हैं। हर तरह से अच्छी स्थिति, तथा अच्छी आर्थिक स्थिति वाले व्यक्ति करें, तो उसे महिमा कहते हैं, तथा उन्हे परमात्मा जैसा समझ लेते हैं।

अमेरिका में रेज्लिंग (मल्ल युद्ध) या कुश्ती नामक खेल प्रचलित है। उसमें तंदरुस्त व्यक्ति ही भाग लेते हैं। कभी-कभी इस खेल में जान गँवा बैठने की स्थिीति उत्पन्न हो जाती है। हमनें देखा, अमेरिका में अंडरटेकर अर्थात् 6.9 इंच ऊँचा व्यक्ति 1984 वें वर्ष से भाग ले रहा था। वह व्यक्ति अब तक उस खेल में पाँच बार मर चुका था। उस व्यक्ति को पेटी में रख कर, पेटी सहित भूमि में दफनाया गया। इसके बावजुद वह व्यक्ति 40 दिनों बाद वापस जीवित होकर लौटा। उसे सब लोग डेड्मैन (मृत व्यक्ति) कहते हैं। इस वर्ष अर्थात् 21-02-2011 से डेढ़ महीने पहले मरा व्यक्ति वापस लौट कर आया। इस बार उस व्यक्ति को डेड्मैन वार्किंग (मृत व्यक्ति चल रहा है) कहकर वहाँ के कुछ लोगों द्वारा बोर्ड पर लिखा गया। इस प्रकार से उस व्यक्ति का वापस आने के पीछे, सब लोग बहुत आश्चर्य थे। फिर भी हमारा कहना है। उस व्यक्ति ने श्वास को बंधक कर जीवित होने के लिए तात्कालिक मरण पर सफलता हासिल थी। इसलिए खतरे के समय में वे तात्कालिक मरण में जाना, कुछ समय विश्राम कर वापस लौट आता है। उसने तात्कालिक मरण से ब्रम्हयोग पाता होगा या नहीं परन्तु उस व्यक्ति ने किसी शक्ति को पाने में सफलता हासिल की कह सकते हैं। तात्कालिक मरण के बारें में जानकारी करने से इससे पहले न समझ आने वाले प्रश्नों के उत्तर मिल जायेगें।

*****

तात्कालिक मरण से क्या आयु बढ़्ती है ?

आयु नामक शब्द बदला हुआ शब्द है, आयु नामक शब्द पूर्व वायु नामक शब्द हुआ करता था, कालक्रम में वायु शब्द आयु शब्द में बदल कर, आयु नाम से पुकारा जाने लगा। मनुष्य के जन्म में ही वह कितना समय जीवित रहेगा निर्णीत रहता है। प्रारब्धकर्म निर्णय में हर प्राणी की आयु रहती हैं। मनुष्य की आयु उसके श्वास पर आधारित रहती है। कोई भी धरती पर कितना समय तक जीयेगा प्रारब्धकर्म में लिखा रहता है। कई करोड़ों, कई लाख, कई हजार श्वासों से मनुष्य के जीवन का निर्णीत होने की वजह से, उनका जीवन उनके श्वासों की समाप्ति से होती है बड़े-बुजुर्ग कहा करते थें। मनुष्य का जिन्दगी उसकी

श्वास पर आधारित है, श्वास वायु है, मनुष्य का जीवन काल उसके नासिक रंद्रों से होकर गुजरने वाली वायु पर आधारित होती है सब समझें, मनुष्य के लिए वायु पहले ही निर्णीत होती है जाननेवाले ज्ञानीयों का कहना था। नासिक रंद्रों में से गुजरने वाली वायु को अंत में आयु कहा जाने लगा। एक मनुष्य की आयु (वायु) उस मनुष्य की सांस लेने पर आधार होती है। इस वजह से मनुष्य के जीवन में श्वास की बड़ी प्रधानता है। एक मनुष्य का जीवनकाल का माप-परिमाण में श्वास का होना ही नहीं बल्कि मनुष्य का जन्म हो, या मनुष्य का मरण हो श्वास मुख्य-भूमिका अदा करती है, मनुष्य के शरीर के अन्दर प्रवेश पहली श्वास को जनन, तथा मनुष्य के शरीर से बाहर निकली अन्तिम श्वास को मरण कहते हैं चर्चा की गई। इससे सिद्ध होता है कि जनन हो, या मरण हो, श्वास द्वारा ही ज्ञात किया जाता है।

मनुष्य के जीवन में श्वास मुख्य-भूमिका अदा करती है जानकारी रखने वाले आध्यात्मिक गुरुओं ने, श्वास पर शोध कर, श्वास द्वारा जीवनकाल को बढ़ाया जा सकता है खोज किया। जीवनकाल के लिए आवश्यक श्वासों का पहले से निर्णीत होना जानने वाले ज्ञानीयों ने, श्वासों को बदलकर जीवनकाल को बढ़ाया जा सकता है समझा पाये थें। उनका केवल बताना ही नही था बल्कि पहले निर्णीत जीवनकाल को बढ़ाकर निरुपित कर दिखाया। ब्रम्हविद्या शास्त्र के अनुसार, आध्यात्मिक क्षेत्र में किए गए शोध से आयु को बढ़ाना साध्य हो सकता है, यह कर्म सिद्धान्त के अंतर्गत आता है हमारे ज्ञानियों ने सूचित किया। पूर्व ज्ञानियों द्वारा सूचित किए गए विषय के आधार से बाद में आये व्यक्तिओं ने उस विषय में जानकर, आचरण कर आयु को आगे बढ़ाया। आध्यात्मिकता के अनुसार आयु को बढ़ाने में तात्कालिक मरण ने मुख्य-भूमिका निभाई। श्री पोतुलूरि वीरब्रम्हम जी जीवित समाधि प्राप्त कर, समाधि में ही लगभग तीन सौ वर्ष सजीव थे। **जीवित समाधि अर्थात् जीवन पर शासित श्वास को शरीर के अन्दर में ही समाधि करना।** शरीर को भूमि के अन्दर दफन करना समाधि होता है। उसमें भी जीवात्मा शरीर के अन्दर ही रहता है। इसलिए इसे सजीव समाधि ही कहा जा सकता है। वीरब्रम्हम जी प्राप्त समाधि को सजीव समाधि, या जीवित समाधि कह सकते हैं।

शालिवाहन सदी आरम्भ से पूर्व, विक्रमार्क उज्जयनी को राजधानी बनाकर, राज्य का पालन करना हमारे देश के इतिहास में दर्ज है। विक्रमार्क के तीन भाईयों में भट्टी नाम का एक व्यक्ति था। भट्टी वैश्या

जाति के स्त्री से जन्मा क्षत्रिय था। विक्रमार्क, तथा भट्टी के पिता एक ही होने की वजह से विक्रमार्क के लिए भट्टी सगा भाई हुआ। पराक्रम में विक्रमार्क, तथा काम-काज में भट्टी बेहद मेधावी थें। विक्रमार्क ने मेधाशक्ति में महान भट्टी को अपना प्रधानमंत्री रखा। भट्टी तथा विक्रमार्क दोनों आध्यात्मिक चिंतन किया करते थें, इसलिए वें आयु के रहस्य को जान पायें। अपने प्रारब्धकर्म के अनुसार निर्णीत श्वासों को तात्कालिक मरण द्वारा ठहराकर, अपनी आयु को लम्बी कर पाये थें। भट्टी तथा विक्रमार्क दोनों ने छ; महीने राज का पालन कर, राज-कार्यों को निपटा कर, छ; महीने जंगल में जाकर तात्कालिक मरण को प्राप्त करते थें। इस विधान से वे एक साल में छ; महीनें जीवन, तथा छ; महीनें तात्कालिक मरण को प्राप्त करते थें। इस प्रकार से वें दो हजार वर्षों तक जीवित रह सकें। महाभारत में भीष्म ने भी कभी-कभी तात्कालिक मरण का आश्रय लेकर 380 वर्षों तक जीवित रहे। तीसर मरण अर्थात् तात्कालिक मरण का रहस्य को जानने वाले कई लोगों ने, रात्रि समय में श्वास को बंधक कर तीसरा मरण को प्राप्त कर, वापस दिन में अपने-अपने कार्यों को किया करते थें। इस विधान से पूर्व कई लोगों ने तात्कालिक मरण को अपने अनुकूल समय में प्राप्त कर अपनी आयु को लम्बी कर कई सौ, कई हजार वर्षों की आयु को पाकर जीवित रहें।

वर्तमान काल में विज्ञान ने उन्नति की, अभौतिक अज्ञानता की भी उन्नति हो गई। आज भौतिक ज्ञान में डुबे व्यक्तिओं को अभौतिकता से अनुसंधान अकाल मरण हो, या तात्कालिक मरण हो समझ से बाहर हो गई। वर्तमान काल में यम.बी.बी.यस पढ़ें व्यक्ति हो, या यम.डी पढ़ें डॉक्टर हो उनके सीखें विज्ञान की वजह से भौतिक रुप से मरण हो, या भौतिक रुप से जनन हो पहचान ही नहीं पा रहें हैं। हमारा ऐसा कहना कई लोगों को हमारे ऊपर क्रोध आ सकता हैं। वैसा उन लोगों का गलतफहमी का शिकार होने के अनेक उदाहरण हैं। हमारी बात में सत्यता को दर्शाने के लिए एक घटना की चर्चा करते हैं देखिए। 05-03-2011 शनिवार शायद T.V.9 चैनल में एक खबर आयी। हम उस दिन सफर कर रहें थें इसलिए प्रत्यक्ष रुप से देख नहीं पायें। परन्तु हमारे अनुचरों ने देखा और बताया जो इस प्रकार से है। एक स्थान में एक दुर्घटना हुई, एका छात्रा घायल हो गयी, जीवन-मरण की स्थिीति में डॉक्टर के पास ले जाया गया। डॉक्टर चिकित्सा करने पर भी बच न सकी। गंभीर स्थिीति में मर जाना, चिकित्सा करने पर भी न बच पाना सहजता होती है। इसलिए उस छात्रा का मरण किसी के मन में कोई शंका पैदा नहीं हुई। डॉक्टर ने उस छात्रा के मरने का

thraithashakam.36

धृवीकरण-पत्र भी दे दिया। शव को घर ले जाना, पश्चात् अन्तिम-संस्कार की तैयारी कर श्मशान ले जाया गया।

श्मशान पहुँचकर शव को नीचे उतारा, वहाँ किए जाने वाले कार्यक्रमों को संपन्न कर अंत में मृतदेह को गड्ढ़े में रखते समय में तबतक मृत छात्रा जीवित हो उठी। वहाँ खड़े लोग आश्चर्य में पड़ गए। इन सब का कारण वह डॉक्टर है जिसने झूठ कहा वह मर गयी, सबने मिलकर उस डॉक्टर से बहस किया, विषय को जानकर डॉक्टर भीं आश्चर्य में पड़ कर कहा " लड़की की चिकित्सा की गई थी फिर भी न बच सकी। मेरी पढ़ी पढ़ाई में वैद्या शास्त्र के अनुसार सच में मृत्यु हो गई थी। सारी जाँचें कर 20 मिनट के बाद ही मैने उसकी मृत्यु हो गई निरधारना किया उसके बाद आपको बताया।" इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी। उस समय उसकी मृत्यु हो गई, अब जीवित हो गई। इस विषय में परमात्मा के अलावा कोई नहीं जान सकता। यह कल का टी.वी में ताजा समाचार था, हाल ही में हुई दूसरी ताजा समाचार से एक और बात पता चली। जो इस प्रकार है।

अनन्तपूर जिला में एक गाँव में एका गरीब परिवार रहता था। उस परिवार में लँगडी़ रहती थी। बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई। अविवाहित लड़की होने की वजह, उस पर गरीब, अर्थी बनाकर उसपर शव को रखकर ले जाने की स्थिति भी न होना, आखिर में बाप, बेटे दोनों ने श्मशान घाट के लिए उस शव को कंधे पर रखकर ले गए। श्मशान पहुँच कर शव को जमीन पर लिटाकर एक ने गड्ढ़े में उतरा दूसरे ने ऊपर से शव को गड्ढ़े में उतारने की सोची। लिटाया गया शव को पकड़कर ऊपर उठाते ही, वह सजीव होकर जी उठी। उन लोगों ने सोचा गड्ढ़े को खाली भरना गलत है इसलिए एक मुर्गी को मारकर उस गड्ढ़े में गाड़ दिया। उनकी बेटी जीवित होने का विषय उस बाप ने या भाई ने किसी को नहीं बताया। इस प्रकार के अनेक घटनाएँ हो रही हैं पता चलता है।

हम लोगों की जानकारी का एक और मुख्य विषय इस प्रकार है। तात्कालिक मरण के बारें में एकदम अनजान अज्ञानियों सहित तात्कालिक मरण को प्राप्त कर रहे हैं। तीसरे मरण के बारें में एकदम अनजान व्यक्ति अपने कर्मानुसार ही तीसरे मरण को पाना, यह न उनको मालूम होता है, न हमें मालूम है। गत काल में अकाल मरण को प्राप्त व्यक्तियों ने सूक्ष्म शरीर में रहकर, स्थूल शरीर से जीवित व्यक्तियों के शरीर में

प्रवेश कर, उनके श्वास को अन्दर बंधक कर बाहर से लोगों को मृत नजर आना भ्रमित करते हैं। श्वास नासिक रंद्रों से न चलने मात्र से मृत समझकर लोग उन्हे दफन कर देते हैं। यथार्थ में श्वास शरीर के अन्दर ही है यह किसी को नहीं मालूम। सूक्ष्म शरीर (भूत) भी इस विधान से दूसरों के शरीर के अन्दर में श्वास को बिना हिले अन्दर ही दबाकर, जीवित व्यक्तिओं को मृत दिखाते हैं। सूक्ष्म शरीर इस विधान से मनुष्यों को कहीं-कहीं तात्कालिक मरण में भेजकर, उन्हें मृत दिखाने की वजह से हम लोग भ्रमित होकर वास्तविकता को समझ नहीं पाते हैं। धरती पर भूत भी ऐसा कार्य कर सकते हैं इस बात की जानकारी किसी को नहीं है।

thraithashakam-36

जनन-मरण के विषयों में भौतिक शास्त्रीयो को भी गलतफहमी हो रही है। इसलिए जनन-मरण के विषयों को सूचित करने के लिए 1980 वें वर्ष में हमनें **" जनन–मरण का सिद्धान्त" नामक ग्रंथ की रचना की।** अब तीसरा मरण अर्थात् तात्कालिक मरण के बारें में सूचित निमित्त **" मरण का रहस्य "** नामक ग्रंथ को लिखा गया। हमारे कहें गए सारे विषय संचलन भरें हैं बताने के लिए यह ग्रंथ एक उदाहरण होगा सूचित करते हुए समाप्त कर रहें हैं।

*****

शिशु के अन्दर श्वास आये बिना मर गया कहना **अज्ञानता न होकर**

मनुष्य के बाहर श्वास जाये बिना मर गया कहना **विज्ञानता होगी** ?

Yours

अर्ध शताधिक ग्रंथ कर्ता ,इन्दू)हिन्दू (धर्म प्रदाता,
संचलनात्मक रचयिता ,त्रैत सिद्धान्त आदि कर्ता

श्री श्री श्री आचार्य प्रबोधानन्द योगिश्वर जी

*****

सत्य को हजार लोग नकारें वह असत्य नहीं होता।

असत्य को हजार लोग कहें वह सत्य नहीं होता.

thraithashakam-36